ज्ञान बिन्दु जी. एस. एकेडमी

For : संघ लोक सेवा आयोग | राज्य लोक सेवा आयोग | कर्मचारी चयन आयोग | रेलवे भर्ती बोर्ड | जी.एस. आधारित सभी परीक्षा हेतु

आधुनिक भारत का इतिहास

Telligram Gyan Bindu GS Academy, Patna

By : Raushan Anand & Bittu Jha

Address : Kishan Cold Storage, Near Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6

Mob. : 8540063639, 9341492082, 9304006502

Scanned with OKEN Scanner

- 15वीं शताब्दी में यूरोप में भौगोलिक खोज की शुरूआत हुई। इसमें पुर्तगाल और स्पेन ने अग्रणी भूमिका निभाया।
- 1487 में पुर्तगाली यात्री बार्थोलोम्यो डियाज अपने देश के राजा जॉन-II का संरक्षण पाकर भारत को खोजने के लिए अपनी यात्रा की शुरूआत की। वह अफ्रीका के दक्षिणी तट तक पहुँचा इसका नाम केप ऑफ गुड होप (उत्तमाशा अंतरीप) रखा।
- वर्ष 1492 में स्पेन निवासी कोलंबस भारत को खोजने निकला था लेकिन वह अमेरिका की खोज कर बैठा और वहाँ के लोगों का नामकरण रेड इंडियन किया।
- 1498 में पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा ने भारत की खोज किया।
- वास्कोडिगामा गुजरात के व्यापारी अब्दुल मुनीद की सहायता से 17 मई 1498 जो भारत के पश्चिमी तट पर स्थित केरल के कालीकट (मालावार तट) पहुँचा। वहाँ के राजा जेमोरिन ने उसका भव्य स्वागत किया। (दुबारा 1502 में आया)
- दूसरी यात्रा- अल्ब्रेज कैब्राल (1500)
- सर्वप्रथम यूरोपीय देश पुर्तगाली भारत आया और सबसे अंतिम में पुर्तगाली उपनिवेश का अंत हुआ।
- पुर्तगाली भारत के साथ संबंध स्थापित करने वाला पहला यूरोपीय था। प्रथम फैक्ट्री कालीकट- 1500 – अल्ब्रेज कैब्राल जेमोरिन ने बंद कर दिया।
- पुर्तगाली ने 1503 में भरत में अपना फैक्ट्री केरल के कोच्चि में स्थापित किया।
- फ्रांसिस्को डी अल्मोड़ा 1505 में प्रथम पुर्तगाली गर्वनर बनकर भारत आया।
- फ्रांसिस्को डी अल्मोड़ा ने "Blue Water Policy" की नीति अपनाया।
- 1509 में अल्फांसो डी अल्बुकर्क पुर्तगाली गर्वनर बनकर भारत आया। इसे भारत में 'पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक' कहा जाता है।
- अल्बुकर्क ने बीजापुर के सुल्तान युसूफ आदिल शाह से 1510 ई. में गोवा छीन लिया।
- गोवा, दमन और दीव का उपनिवेशीकरण मूलत: पुर्तगालियों के द्वारा किया गया।
- 1961 में गोवा को पुर्तगाली प्रभाव से मुक्त करके भारतीय संघ में शामिल किया गया।
- 12वाँ संविधान संशोधन 1962 के तहत संघ शासित क्षेत्र का दर्जा गोवा को प्रदान किया गया।
- 56वाँ संविधान संशोधन 1987 के तहत गोवा को 25वाँ राज्य का दर्जा प्रदान किया गया।
- पुर्तगालियों ने भारत में कार्टेज व्यवस्था लागू किया।
- मुगल शासकों के साथ पुर्तगालियों का संबंध अकबर के काल में स्थापित हुआ।
- पुर्तगाली ने मध्य एशिया से आलू, तंबाकू तथा मकई भारत लाए।
- पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत में तंबाकू की खेती, जहाज निर्माण, प्रिंटिंग प्रेस की शुरूआत हुई।
- भारत तक समुद्री मार्ग की खोज वास्कोडिगामा (पुर्तगाली) ने की।

Scanned with OKEN Scanner

- 1503 में काली मिर्च और मसालों के व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से पुर्तगालियों ने कोचीन के पास अपनी पहली व्यापारिक कोठी बनाई। इसके बाद कन्नूर (1505) में पुर्तगालियों ने अपनी दूसरी फैक्ट्री बनाई।
- विजयनगर शासक, कृष्णदेव राय ने पुर्तगालियों को भटकल में दुर्ग बनाने की इजाजत दी।
- **नीनो-डी-कुन्हा (1529-1538)**– अल्बुकर्क के बाद सबसे महत्वपूर्ण वायसराय था। 1530 में कोचीन की जगह गोवा को पुर्तगालियों की राजधानी बनाया और सेंट थोमे तथा हुगली में पुर्तगाली बस्तियाँ बनाई।
- नीनो-डी-कुन्हा ने गुजरात के शासक बहादुरशाह से मुलाकात के दौरान जहाज पर उसकी हत्या कर बसीन (1534) व दीव (1535) पर आधिपत्य कर लिया।
- पुर्तगालियों ने फारस की खाड़ी, हॉरमुज तथा हिंद महासागर में अपनी चौकियाँ स्थापित की। भारत का जापान के साथ व्यापार का श्रेय भी पुर्तगालियों को जाता है।

डच / नीदरलैंड / हॉलैंड ईस्ट इंडिया कंपनी

- पुर्तगालियों के बाद डचों का आगमन हुआ। डच, हालैंड (वर्त्तमान नीदरलैंड्स) के निवासी थे।
- कानेर्लियन हाऊटमैंन प्रथम डच यात्री था जिन्होंने 1596 में भारत की यात्रा की।
- 1602 में 'वेरिंगदे ओस्त इंडसे कंपनी' (VOC) के नाम से डच कंपनी की स्थापना हुई। बाद में विभिन्न डच कंपनियों को मिलाकर यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड' के नाम से एक विशाल व्यापारिक संस्थान की स्थापना की गई।
- भारत में प्रथम डच फैक्ट्री 1605 में मसूलीपट्टनम (आंध्र प्रदेश) में स्थापित किया गया, जहाँ वे अपने सिक्के भी ढ़ालते थे। परंतु आगे चलकर "नागपट्टनम" को मुख्यालय बनाया।
- भारत से वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है।
- डचों का भारत में अंतिम रूप से पतन 1759 में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य "बेदरा के युद्ध" के बाद हुआ।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी

- 1599 में मर्चेंट एडवेंचरर्स नाम से विख्यात कुछ व्यापारियों ने पूर्व से व्यापार करने के उद्देश्य से "गर्वनर एंड कंपनी ऑफ मर्चेंट ऑफ लंदन ट्रेडिंग टू द ईस्ट इंडिया" नामक कंपनी की स्थापना की। कालांतर में इसी कंपनी का नाम संक्षिप्त करके "ईस्ट इंडिया कंपनी" कर दिया गया।
- 31 दिसंबर 1600 को महारानी एलिजाबेथ–I ने एक "रॉयल चार्टर" जारी कर इस कंपनी को प्रारंभ में 15 वर्ष के लिए पूर्वी देशों से व्यापार करने का एकाधिकार पत्र दे दिया। किंतु आगे चलकर 1609 में ब्रिटिश सम्राट् जेम्स-I ने कंपनी को अनिश्चित कालीन व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया।
- प्रारंभ में "ईस्ट इंडिया कंपनी" में 217 साझीदार थे और पहला गर्वनर टॉमस स्मिथ था।
- भारत में प्रथम अंग्रेजी फैक्ट्री गुजरात के सूरत में 1608 में स्थापित हुआ, इसे 1612 ई. में मान्यता मिला।
- BEIC की स्थापना के समय मुगल बादशाह अकबर थे।
- मुगल दरबार में आने वाला प्रथम अंग्रेज कैप्टन हॉकिंस था।
- 1611 में (आंध्र प्रदेश) के मसूलीपट्टनम में अंग्रेजों की दूसरी फैक्ट्री स्थापित हुआ जिसे शीघ्र ही कर्नाटक की सरकार ने मान्यता दे दिया। इस प्रकार भारत की प्रथम मान्यता प्राप्त फैक्ट्री मसूलीपट्टनम है।
- 1608 – जेम्स–I – हॉकिन्स – जहाँगीर (आगरा दरबार)
- 1615 – जेम्स–I – सर टॉम्स रो – जहाँगीर (अजमेर)
- फ्रांसिस डे ने 1639 में चन्द्रगिरि के राजा से मद्रास को पट्टे पर लिया, जहाँ कालांतर में एक किलेबंद कोठी बनाया गया। इसी कोठी को "फोर्ट सेंट जॉर्ज" नाम दिया गया।

Scanned with OKEN Scanner

- 1661 में पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन का विवाह इंग्लैंड के सम्राट चार्ल्स-II के साथ हुआ। पुर्तगाल के राजा ने उपहार स्वरूप बम्बई का क्षेत्र चार्ल्स-II को दिया।
- 1665 में चार्ल्स-II ने मात्र 10 पौंड वार्षिक किराया पर यह क्षेत्र अंग्रेजी कंपनी को दे दिया।
- 1698 में बंगाल के सूबेदार अजीम उशान ने मात्र 1200 रु. वार्षिक किराया पर कंपनी को सूतानती, गोविन्दपुर और कालीकाता का जमींदारी प्रदान किया। जिसे 1700 ई. में जॉब चारनाक ने तीनों को मिलाकर वर्त्तमान कोलकाता का नींव रखा।
- कलकत्ता को अंग्रेजों ने 1700 में पहला प्रेसीडेंसीनगर घोषित किया। कलकत्ता 1774 से 1911 तक ब्रिटिश भारत की राजधानी बना रहा।
- 1717 में मुगल बादशाह फर्रूखशियर ने एक फरमान के तहत अंग्रेजी कंपनी को खुली छूट दिया जिसे कंपनी के लिए मैग्नाकार्टा कहा जाता है।

डेनिस

- अंग्रेजों के बाद डेन 1616 में भारत आया।
- डेनिसों ने 1620 में ट्रैकोबार तथा 1676 में सेरामपोर (बंगाल) में अपनी फैक्ट्री स्थापित की।
- यह कंपनी भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने में असफल रही और 1745 तक अपनी सारी फैक्ट्री अंग्रेजों को बेचकर चली गयी।

फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी

- 1664 में फ्रांस के सम्राट् लुई चौदहवाँ के मंत्री कोल्बर्ट के प्रयास से ''फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी'' की स्थापना हुई। फ्रांसीसी कंपनी का निर्माण फ्रांस सरकार द्वारा किया गया था।
- 1668 में फ्रैंकोइस कैरो द्वारा सूरत में प्रथम फ्रांसीसी फैक्ट्री स्थापित किया गया। (1669-मसूलीपट्टनम-दूसरा)
- फ्रांसिस मार्टिन ने पांडिचेरी की नींव रखी और 1673 में इसे अपना मुख्यालय बनाया। ये पांडिचेरी के प्रथम फ्रांसीसी गर्वनर थे।
- 1673 में बंगाल के नबाव शाइस्ता खाँ ने फ्रांसीसियों को एक जगह किराए पर दी, जहाँ चन्द्रनगर की सुप्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गई।
- 1742 के पश्चात् व्यापारिक लाभ कमाने के साथ-साथ फ्रांसीसियों की महत्वकाक्षाएँ बढ़ने लगी। इस दौरान फ्रांसीसी गर्वनर डूप्ले (सहायक संधि का जन्मदाता) का भारतीय राज्यों में हस्तक्षेप और फ्रांसीसी शक्ति का विस्तार हुआ। परिणामस्वरूप अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच तीन युद्ध हुए, जिन्हें ''कर्नाटक युद्ध'' के नाम से जाना जाता है।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध – 1746 – 48 (एला शापल संधि)
- द्वितीय कर्नाटक युद्ध – 1749 – 53 (पांडिचेरी की संधि)
- तृतीय कर्नाटक युद्ध – 1756 – 63 (पेरिस की संधि)

वांडीवश का युद्ध 22 जनवरी 1760

(तमिलनाडु)

फ्रांसीसी और अंग्रेज

(काउण्ट लाली) **(आयरकूट)**

हार **जीत**

- **गेराल्ड अंगियर**– बंबई का संस्थापक
- **चार्ल्स आयर**– फोर्ट विलियम का प्रथम प्रशासक
- **जॉन सुरमन**– मुगल सम्राट फर्रुखशियर से विशेष व्यापारिक सुविधा प्राप्त करनेवाले शिष्टमंडल का मुखिया।
- **राल्फ फिंच**– भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज।

Scanned with OKEN Scanner

2. बंगाल में BEIC के शासन की व्यवस्था

- बगाल में प्रथम अंग्रेजी फैक्ट्री 1651 ई. में हुगली में स्थापित हुआ (सुबेदार– शाहशुजा से अनुमति)
- 1700 में औरंगजेब ने मुर्शिद कुली खाँ को बंगाल का दीवान युिक्त किया। औरंगजेब के निधन के पश्चात् बंगाल में स्वतंत्र सत्ता की नींव मुर्शिद कुली खाँ ने डाला।
- मुर्शिद कुली खाँ ने 1722 ई. में मुर्शिदाबाद नामक नए नगर बसाया तथा अपनी राजधानी ढ़ाका के बदले मुर्शिदाबाद को बनाया।
- फर्रुखशियर उड़ीसा की सूबेदारी भी मुर्शिदकुली खाँ को दिया।
- मुर्शिदकुली खाँ ने इजारेदारी प्रथा तथा तकाबी ऋण किसानों को प्रदान किया।
- मुर्शिदकुली खाँ का निधन 1727 में हो गया तत्पश्चात् उसका दामाद शुजाउद्दीन (1727-1739) बंगाल का नबाव बना। इन्होंने सैद्धांतिक रूप से बिहार को बंगाल में मिलाया और यहाँ का उपसूबेदार अलीवर्दी खाँ को बनाया।
- शुजाउद्दीन के बाद उसका बेटा सरफराज खाँ (1739) में बंगाल का नवाब बना।
- 1740 ई. में गिरिया (बंगाल) का युद्ध हुआ जिसमें अलीवर्दी खाँ ने सरफराज खाँ की हत्या कर अपने को बंगाल का नबाव घोषित किया।
- **अलीवर्दी खाँ (1740–1756)–** अलीवर्दी खाँ मुगलों को कर देना बंद कर दिया। इनके शासनकाल में बंगाल इतना समृद्धशाली हो गया की बंगाल को भारत का स्वर्ग कहा जाने लगा।
- 1751 में मराठों ने बंगाल पर आक्रमण किया जिसमें अलीवर्दी खाँ की पराजय हुई। उन्होंने उड़ीसा का क्षेत्र मराठों को दे दिया एवं 6 लाख वार्षिक देना स्वीकार किया।
- अलीवर्दी खाँ ने अंग्रेजों की तुलना मधुमक्खी के साथ करते हुए कहा कि अगर उसे नहीं छेड़ा जाय तो वह शहद देगी और अगर छेड़ दिया जाय तो वह काट-काट कर खा जाएगी।
- अलीवर्दी खाँ का निधन 1756 में हो गया, तत्पश्चात् उसका नाती सिराजुउधौला नबाव बना।
- सिराजुउधौला का विरोध उसकी मौसी घसीटी बेगम (ढाका की बेगम) और मौसेरा भाई साकेत जंग (पूर्णिया) ने किया।
- BEIC का व्यापारिक मुख्यालय कोलकाता में था जिसे फोर्ट विलियम कहते थे, अंग्रेजी कंपनी ने इसका किलाबंदी करना आरंभ किया।
- नवाब सिराजुउधौला 15 जून 1756 को कलकत्ता स्थित फोर्टविलियम पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकार में ले लिया। इस समय यहाँ के प्रधान रोजर ड्रेक और सेनापति मिनिचीन था जो भागकर बंगाल के फुल्टा बंदरगाह में जा कर छिप गया।
- सिराजुउधौला कोलकत्ता को जीतकर एक प्रमुख व्यापारी मानिकचंद के हाथ कलकत्ता सौंपकर मुर्शिदाबाद वापस लौट गया।
- सिराजुउधौला के समय 20 जून 1756 में "ब्लैक होल की घटना" हुई जिसका उल्लेख एक अंग्रेज अधिकारी हॉलबेल ने किया। हॉलबेल के अनुसार, "नबाव ने एक छोटी-सी कोठरी में 146 अंग्रेजों को बंद कर दिया। जिसमें से महज 23 अंग्रेज ही जिंदा रहे थे।

Scanned with OKEN Scanner

- यह घटना मद्रास स्थित कंपनी के मुख्यालय पहुँचा तब वहाँ से वाटसन (नौसेना अध्यक्ष) एवं राबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में एक विशाल सेना कलकत्ता को जीतने के लिए भेजा गया। यह सेना जनवरी 1757 में कलकत्ता पहुँची और कलकत्ता के प्रभारी मानिकचंद से समझौता कर पूरे कलकत्ता पर अधिकार कर लिया।
- **अलीनगर की संधि (9 फरवरी, 1757)**– इस संधि के तहज सिराजुउधौला ने फोर्ट विलियम के किलाबंदी का अधिकार दिया, युद्ध क्षतिपूर्त्ति के रूप में 3 लाख रुपया दिया तथा 1717 के प्राप्त व्यापारिक अधिकार वापस अंग्रेजी कंपनी को दिया।
- **प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757)**– यह युद्ध बंगाल के प्लासी के मैदान में बंगाल के नबाव सिराजुउधौला तथा अंग्रेजी कंपनी के बीच हुआ इसमें अंग्रेजी कंपनी का नेतृत्व राबर्ट क्लाइव कर रहा था। इस युद्ध में नवाब के सेनापति मीरजाफर के धोखाधड़ी के कारण सिराजुउधौला की हार हुई।
- सिराजुउधौला जब युद्ध भूमि से वापस लौट रहा था तब मीरजाफर के पुत्र मीरन ने उसकी हत्या कर दी।
- **मीरजाफर (1757-1760)**– क्लाइव का गदहा या गीदड़ कहा जाता है। मीरजाफर अंग्रेजी कंपनी को 24 परगना जिला और 1 करोड़ 77 लाख रूपया दिये।
- **मीरकासिम (1760-63)**– मीरकासिम ने मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया। इन्होंने मुंगेर में तोप व बारूद का कारखाना स्थापित किया।
- **बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर, 1764)**– यह युद्ध 1764 ई. में अंग्रेजी कंपनी और संयुक्त सेना के बीच हुआ जिसमें अंग्रेजी कंपनी की जीत हुई। कंपनी का नेतृत्व हेक्टर मुनरों कर रहा था जबकि संयुक्त सेना में बंगाल के अपदस्थ नबाव मीरकासिम, अवध के नबाव शुजाउधौला तथा मुगल बादशाह शाहआलम–II शामिल था जिसमें संयुक्त सेना का नेतृत्व शुजाउधौला ने किया। इस समय बंगाल के गर्वनर वेन्सिटार्ड था।
- **इलाहाबाद की संधि (1765)**– इलाहाबाद की दो संधि 12 अगस्त को और 16 अगस्त को हुई। इसमें अंग्रेजों का नेतृत्व राबर्ट क्लाइव ने किया।
- **इलाहाबाद की प्रथम संधि (12 अगस्त, 1765)**– यह संधि मुगल बादशाह शाहआलम–II तथा क्लाइव के मध्य सम्पन्न हुआ। इस संधि के तहत–
  - कंपनी को मुगल सम्राट शाहआलम–II से स्थायी रूप से बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई। इसके बदले कंपनी ने मुगल सम्राट को 26 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देना स्वीकार किया।
  - कंपनी ने अवध के नबाव से कड़ा और इलाहाबाद के जिले लेकर मुगल सम्राट शाहआलम-II को सौंप दिये।
- **इलाहाबाद की द्वितीय संधि (16 अगस्त, 1765)**– यह संधि अवध के नबाव शुजाउधौला एवं क्लाइव के बीच हुआ। इस संधि के तहत–
  - नबाव द्वारा कंपनी को 50 लाख रुपये दिये जाने की बात स्वीकार की गई।
  - इलाहाबाद और कड़ा को छोड़कर अवध का शेष क्षेत्र नबाव को वापस कर दिया गया।
  - कंपनी को अवध में कर मुक्त व्यापार करने की छूट प्रदान की गई।
- अंग्रेजों का संरक्षण प्राप्त बंगाल का प्रथम नबाव– **नज्मुउधौला**
- अंतिम नबाव– **मुबारकउधौला**

Scanned with OKEN Scanner

3. कंपनी के अधीन गर्वनर जनरल

- बंगाल का प्रथम गर्वनर- **राबर्ट क्लाइव**
- बंगाल का अंतिम गर्वनर तथा प्रथम गर्वनर जनरल- **वारने हेस्टिंस**
- बंगाल का अंतिम गर्वनर जनरल- **लार्ड विलियम बैंटिक**
- भारत का प्रथम गर्वनर जनरल- **लॉर्ड विलियम बैंटिक**
- भारत का अंतिम गर्वनर जनरल- **लॉर्ड कैनिंग**
- भारत का प्रथम वायसराय- **लॉर्ड कैनिंग**
- भारत का अंतिम वायसराय- **लॉर्ड माउंटबेटन**
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गर्वनर जनरल- **लॉर्ड माउंटबेटन**
- स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम गर्वनर- **चक्रवर्त्ती राजगोपालाचारी**

बंगाल के गर्वनर

राबर्ट क्लाइव (1757-60 & 1765-67)

- हीरो ऑफ आरकाट (1751) कहा जाता है।
- इन्होंने प्लासी के युद्ध में कंपनी की तरफ से नेतृत्व किया था।
- इन्होंने अंग्रेजी कंपनी की तरफ से इलाहाबाद की संधि (1765) में भाग लिया था।
- इन्होंने बंगाल में द्वैध शासन (1765-1772) को लागू किया।
- क्लाइव ने राजस्व की वसूली के लिए उप-दीवान नियुक्त किया-
  - बंगाल – मुहम्मद रजा खाँ
  - बिहार – राजा शिताब राय
  - उड़ीसा – राय दुर्लभ
- **अन्य गर्वनर**- बरेलास्ट (1767-69), कार्टियर (1769-72), वारेन हेस्टिंग्स (1772-74)

कंपनी के अधीन गर्वनर जनरल

वारेन हेस्टिंग्स (1772-85)

- इन्होंने बंगाल में द्वैध शासन को समाप्त किया।
- इन्होंने आर्थिक सुधार के तहत बोर्ड ऑफ रेवेन्यू (राजस्व बोर्ड) की स्थापना किया।
- इन्होंने राजस्व की वसूली के लिए 5 जगह पर चुंगी घर की स्थापना किया- 1. ढ़ाका, 2. कलकत्ता, 3. हुगली, 4. मुर्शिदाबाद, 5. पटना।
- खजाना को मुर्शिदाबाद से कलकत्ता लाया।
- इनके शासनकाल में Regulating Act पारित हुआ (1773) जिसके तहत बंगाल के गर्वनर का पद बदलकर गर्वनर जनरल कर दिया गया। इस Act के तहत कंपनी के अधीन बंगाल के प्रथम गर्वनर जनरल हेस्टिंग्स बने।
- 1781 में मुस्लिम शिक्षा के लिए कलकत्ता में प्रथम मदरसा की स्थापना हुई।
- 1782 में जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत विद्यालय की स्थापना की।
- विलियम विकिन्सन ने गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

Scanned with OKEN Scanner

- हॉलैंड ने संस्कृत व्याकरण का अंग्रेजी में अनुवाद किया।
- इन्हीं के काल में 1784 में विलियम जोन्स ने बंगाल में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना किया।
- पिट्स इंडिया Act के विरोध में इस्तीफा देकर जब वारेन हेस्टिंग्स 1785 में इंग्लैंड पहुँचा तो बर्क नामक सांसद द्वारा उनपर महाभियोग प्रस्ताव लाया गया परन्तु 1795 में इसे आरोपों से मुक्त कर दिया गया। इसके बावजूद इन्होंने आत्महत्या कर लिया।
- **सर जॉन मैक्फरसन (1785–86)**– इसे अस्थायी गर्वनर जनरल नियुक्त किया गया था।

लॉर्ड कॉर्नवालिस (1786-1793 & 1805)

- कार्नवालिस ने 1793 में कानूनों का संग्रह तैयार किया जिसे कार्नवालिस कोड या कार्नवालिस संहिता कहा जाता है। यह शकितयों के पृथक्करण सिद्धांत पर आधारित था।
- जिला में पुलिस थाना की स्थापना कर दारोगा की नियुक्ति किया।
- कॉर्नवालिस को भारत में नागरिक सेवा का जनक माना जाता हैं।
- कंपनी के कर्मचारियों के व्यक्तिगत व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया।
- कॉर्नवालिस ने 1793 में स्थायी बंदोबस्त/इस्तमरारी प्रथा/जमींदारी प्रथा लागू किया, जिसके तहत जमींदारों को भूराजस्व का 90% $\left(\frac{10}{11}\right)$ भाग कंपनी को तथा लगभग 10% $\left(\frac{1}{11}\text{ भाग}\right)$ अपने पास रखना था।
- स्थायी बंदोबस्त भारत के 19% भू-भाग पर लागू था। जिसके अंतर्गत बिहार, बंगाल, उड़ीसा, U.P. के बनारस का क्षेत्र तथा उत्तरी कर्नाटक का क्षेत्र शामिल था।
- स्थायी बंदोबस्त की योजना जॉन शोर ने बनाया।
- स्थायी बंदोबस्त में सूर्यास्त कानून लागू किया गया था जिसकी विस्तारपूर्वक चर्चा ताराशंकर बंधोपाध्याय की रचना गणदेवता में मिलती है।

सर जॉन शोर (1793-98)

- इन्होंने भारत में अहस्तक्षेप की नीति अपनाया।
- खुर्दा की लड़ाई (1795)– 1. निजाम एवं मराठा के बीच हुआ।
- इलाहाबाद का कंपनी के साम्राज्य में विलय।

लॉर्ड वेलेज्ली (1798-1805)

- भारत में कंपनी राज्य के विस्तार के लिए सहायक संधि पद्धति की शुरूआत किया।
- भारत में सहायक संधि का प्रयोग वेलेज्ली से पूर्व फ्रांसीसी गर्वनर डूप्ले ने किया था।
- वेलेज्ली के साथ सहायक संधि करने वाला पहला राज्य हैदराबाद हुआ जो 1798 में सहायक संधि पर हस्ताक्षर किया।

  मैसूर– 1799, तंजौर– 1799, अवध– 1801

  मराठा– 1801, बरार एवं भोसले–1803

  सिंधिया– 1803
- इन्होंने ही 1800 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना किया।
- वेलेज्ली के काल में ही 1803 में अंग्रेजी कंपनी ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- यह स्वयं को बंगाल का शेर कहता था।

Scanned with OKEN Scanner

- चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध–1799 में इन्हीं के काल में हुआ जिसमें टीपू सुल्तान मारा गया।

कार्नवालिस (1805)

- इनका दूसरा कार्यकाल 1805 में शुरू हुआ लेकिन शीघ्र ही शिमला में इनका निधन हो गया।

सर जॉर्ज वार्लो (1805-1807)

- 1806 में वेल्लोर (कर्नाटक) के सिपाहियों ने ब्रिटिश सरकार की धार्मिक नीतियों के खिलाफ विद्रोह किया जिसे वेल्लोर का सिपाही विद्रोह कहा गया। इस समय मद्रास के गर्वनर विलियम बैंटिक था जिन्होंने इस विद्रोह को दबा दिया।

लॉर्ड मिन्टो प्रथम (1807–1813)

- इनके शासनकाल में रणजीत सिंह एवं अंग्रेजों के बीच अप्रल 1809 में अमृतसर की संधि हुआ इसमें अंग्रेजी कंपनी की तरफ से मध्यस्ता चार्ल्स मेटकॉफ ने किया था।
- 1813 का चार्टर एक्ट पारित हुआ।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

- इन्होंने भारत में कंपनी राज्य के विस्तार के लिए जिस नीति को अपनाया उसे फारवर्ड पॉलिसी या प्रसारवादी नीति के नाम से जाना जाता है।
- इनके शासनकाल में 1814-16 के बीच आंग्ल-नेपाल संघर्ष हुआ। नेपाल की तरफ से नेतृत्व अमर सिंह थापा (गोरखा) ने किया जबकि कंपनी ने गिलैस्पी, मिलिक्स, गार्डनर तथा ओक्टर लोनी के नेतृत्व में सेना गोरखाओं को खिलाफ भेजा। इसमें गोरखाओं की बुरी तरह हार हुई।
- यह युद्ध अंतत: 1816 ई. में सुगौली (चंपारण) की संधि के तहत समाप्त हुआ।
- इन्होंने पिंडारियों का दमन किया। यह मराठों का सबसे बड़ा सहयोगी था। मैल्कम ग्रे नामक विद्वान ने पिंडारी को मराठों के शिकारी कुत्ता की संज्ञा दिया। पिंडारियों के प्रमुख नेताओं में वासिल मुहम्मद, चीतू तथा करीम खाँ थे।
- इनके शासनकाल में तृतीय आंग्ल-मराठा संघर्ष 1817-1818 में हुआ। इस संघर्ष में मराठा शक्ति बुरी तरह पराजित हुआ अंतिम पेशवा बाजीराव~II को पेशवा का पद छोड़ना पड़ा तथा उन्हें पेंशन देकर विठूर (कानपुर) भेज दिया गया।
- इन्हीं के शासनकाल में 1822 में टैनेन्सी एक्ट या काश्तकारी अधिनियम पारित हुआ।
- बम्बई प्रेसीडेन्सी की स्थापना 1818 में हुआ।

रैयतवाड़ी व्यवस्था

- रैयतवाड़ी व्यवस्था में प्रत्येक पंजीकृत भूमिदार को भूमि का स्वामी माना गया और लगान जमा करने का दायित्व भी किसानों को ही दिया गया। (रैयत का अर्थ- किसान)
- यदि किसान निर्धारित लगान जमा नहीं कर पाता था तो उसे भू-स्वामित्व से वंचित कर दिया जाता था।
- रैयवाड़ी व्यवस्था का जन्मदाता टॉमस मुनरो और कैप्टन रीड को माना जाता है। 1792 में रैयतवाड़ी व्यवस्था मद्रास के बारामहल जिले में पहली बार कर्नल रीड द्वारा लागू की गई।
- 1820 में इस व्यवस्था को मद्रास में लागू किया गया। यहाँ इस व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए मुनरो को मद्रास का गर्वनर नियुक्त किया गया।
- 1825 में यह व्यवस्था बंबई तथा 1858 तक यह संपूर्ण दक्कन और अन्य क्षेत्रों में लागू हो गई।
- रैयतवाड़ी बंदोबस्त कुल 51% भू-भाग पर लागू किया गया। (मद्रास, कर्नाटक, महाराष्ट्र)

Scanned with OKEN Scanner

- यह 30 वर्षों के लिए लागू की गई तथा इसकी दर 1/3 निश्चित की गई।

महालवाड़ी व्यवस्था

- "महाल" का तात्पर्य है- गाँव। इस व्यवस्था के अंतर्गत गाँव के मुखिया से सरकार का लगान वसूली का समझौता होता था, जिसे महालवाड़ी बंदोबस्त कहा गया।
- इस व्यवस्था का जनक हॉल्ट मैंकेजी को माना जाता है। इसने 1819 के अपने प्रतिवेदन में महालवाड़ी व्यवस्था का सूत्रपात किया, जिसे सर्वप्रथम 1822 में लागू किया गया।
- यह व्यवस्था पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रांत इत्यादि जैसे में लागू था। यह बिटिश भारत की भूमि के 30% भाग पर लागू था।

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-1828)

- इनके शासनकाल में प्रथम आंग्ल-वर्मा युद्ध 1824-26 के बीच लड़ा गया। इसी युद्ध के दरम्यान बैरकपुर (बंगाल) के भारतीय सैनिकों को वर्मा जाने के आदेश दिए गए परंतु धार्मिक कारणों से 1824 में भारतीय सैनिकों ने वर्मा जाने से इन्कार कर दिया तथा दबाव देने पर विद्रोह कर दिया इसे बैरकपुर विद्रोह के नाम से जाना जाता है।
- आंग्ल-वर्मा युद्ध का अंत अंग्रेजी कंपनी के पक्ष में हुआ। इस समय वर्मा नरेश महाबंदुला था, जिन्होंने कंपनी के साथ यादुंब की संधि किया।
- कालांतर में वर्मा को जीतकर 1885 ई. के आसपास भारत में शामिल कर लिया गया। 1885 से 1935 तक वर्मा भारत में शामिल हुआ। 1935 के Act के तहत वर्मा भारत से 1936 में अलग हो गया।
- 4 जनवरी 1948 को वर्मा स्वतंत्र देश बना जिसे वर्त्तमान में म्यांमार कहते है।

लॉर्ड विलियम बैंटिक (1828-1835)

- बैंटिक सामाजिक सुधार के तहत भारतीय समाज सुधारक राजा राम मोहन राय के सहयोग से 1829 ई. में सती प्रथा के खिलाफ कानून बनाकर इसे प्रतिबंधित कर दिया। (धारा-17)
- 1829 में इसे बंगाल प्रेसीडेंसी में तथा 1830 ई. में इसे बम्बई तथा मद्रास प्रेसीडेंसी में लागू किया गया।
- बैंटिक ने कर्नल स्लीमन की सहायता से 1830 ई. में ठगी प्रथा को समाप्त कर दिया।
- चार्टर एक्ट 1833 के तहत बैंटिक भारत के प्रथम गर्वनर जनरल बने।
- बैंटिक के काल में 1833 के अधि. की धारा-87 के अनुसार योग्यता के आधार पर अब सरकारी सेवा में लोगों को भर्त्ती किया जाने लगा। रंग, जन्म, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव को प्रतिबंधित कर दिया गया।
- इसी के काल में मैकाले की अनुशंसा पर अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया।

चार्ल्स मेंटकॉफ (1835-36)

- इसे भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।

लॉर्ड ऑक्लैण्ड (1836-1842)

- इनके शासनकाल में 1839 में कलकत्ता से दिल्ली तक G.T. रोड का मरम्मत करावाया गया।
- इन्हीं के शासनकाल में भारतीय विद्यार्थियों को डॉक्टरी की शिक्षा हेतु विदेश जाने की अनुमति ब्रिटिश संसद ने प्रदान की।
- इनके शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध था। इस युद्ध में ऑकलैण्ड को जगह-जगह पराजय का सामना करना पर रहा था जिस कारण 1842 में उसे इंग्लैंड बुला लिया गया तथा एलनबरो को गर्वनर जनरल बनाकर भेजा गया। एलनबरो के प्रयास से इस युद्ध का अंत अंग्रेजी कंपनी के पक्ष में हुआ।

Scanned with OKEN Scanner

- द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध– 1878-80 लॉर्ड लिटन
- तृतीय आंग्ल-अफगान युद्ध– 1919-21 जेम्सफोर्ड

लार्ड एलनबरो (1842-44)

- एलबनरो 1843 ई. में सिंध को जीतकर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया।
- एलनबरो ने 1842 के Act के नियम-V द्वारा भारत में दास प्रथा का अंत किया।
- रविवार की छुट्टी की शुरूआत 1843 से हुई।

लार्ड हार्डिंग-I (1844-1848)

- इन्होंने नरबलि प्रथा को समाप्त किया।
- इसके शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1845-46) था। जिसमें अंग्रेज विजयी हुए।

लॉर्ड डलहौजी (1848-1856)

- अंग्रेजी कंपनी का सबसे ज्यादा विस्तार डलहौजी के शासनकाल में हुआ।
- डलहौजी के समय में भारत में कंपनी राज्य के विस्तार के लिए जिस नीति को अपनाया गया उसे राज्य हड़प नीति या व्यपगत सिद्धांत या डॉक्ट्रिन ऑफ लेप्स कहा गया।
- डलहौजी ने भारत में देशी रियासतों को तीन भागों में बाँटा-
  1. स्वतंत्र देशी रियासत उसे कहा गया जिन्होंने कभी भी अंग्रेजी कंपनी की अधीनता को स्वकार नहीं किया। इसे गोद लेने का अधिकार था।
  2. अधीनस्थ रियासत वैसे रियासत को कहा गया जिन्होंने या तो मुगल साम्राज्य के अधीन था या मराठों के अधीन था परंतु बाद में अंग्रेजी कंपनी की अधीनता को मान लिया। गोद लेने से पहले सरकार की सहमति प्राप्त करे।
  3. आश्रित देशी रियासत वैसे रियासतों को कहा गया जिसकी स्थापना अंग्रेजी कंपनी अपने मसौदा के द्वारा किया। ऐसे राज्यों के शासकों के उत्तराधिकारी गोद लेने पर पूर्णत: पाबंदी लगा दी गई थी।

हड़प नीति का क्रियान्वयन

सतारा (1848)– डलहौजी की हड़प नीति का पहला शिकार सतारा था। सतारा के राजा अप्पा साहिब ने अपनी मृत्यु से पूर्व एक बालक गोद लिया था, परंतु डलहौजी ने उस उत्तराधिकारी को यह कहकर अमान्य करार दिया कि सतारा राज्य लॉर्ड हेस्टिंग्स ने पुनस्थापित किया था।

जैतपुर और संबलपुर (1849)– उड़ीसा में संबलपुर राज्य का शासक नारायण सिंह नि:संतान मर गया। मृत्यु पूर्ववह कोई पुत्र गोद नहीं ले सका था। इसलिए विधवा रानी ने शासन प्रबंधन अपने हाथ में ले लिया, लेकिन डलहौजी ने इसे अमान्य घोषित करते हुए संबलपुर को तथा उसी दौरान बुंदेलखंड में स्थित जैतपुर को हड़प नीति के आधार पर 1849 में ब्रिटिश राज्य में मिला लिया।

- डलहौजी ने आगे इसी नीति के तहत बघाट (1850), उदयपुर (1852), झाँसी (1853) तथा नागपुर (1854) का विलय भी किया।
- कंपनी ने 1856 ई. में कुशासन के आधार पर अवध को कंपनी राज्य में शामिल कर लिया। इस समय अवध के नबाव वाजिद अली शाह था जिसे अपदस्थ कर बंगाल भेज दिया गया।
- डलहौजी के शासनकाल में पहली बार अप्रैल 1853 में मुम्बई से थाणे के बीच ट्रेन चलाया गया।

Scanned with OKEN Scanner

- 1854 में नया पोस्ट ऑफिस एक्ट पारित हुआ और भारत में पहली बार डाक टिकट का प्रचलन प्रारंभ हुआ।
- 1856 में इन्होंने तोपखाने के मुख्यालय को कलकत्ता से मेरठ स्थानांतरित किया और सेना का मुख्यालय शिमला में स्थापित किया।
- इन्होंने शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया।
- 1854 ई. में डलहौजी ने चार्ल्स वुड के नेतृत्व में शिक्षा कमिटि का गठन किया जिसे वुड डिस्पैच कहते है। वुड डिस्पैच को शिक्षा के क्षेत्र में मैग्नाकार्टा कहते है।

लार्ड कैनिंग (1856-1862)

- भारत का अंतिम गर्वनर जनरल तथा प्रथम वायसराय था।
- इन्होंने 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधि. को लागू किया।
- इनके शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना 1857 ई. का विद्रोह था।
- कैनिंग के समय इंडियन हाइकोर्ट एक्ट पारित हुआ; जिसके द्वारा बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।

लॉर्ड एल्गिन (1862-63)

- बहावी आंदोलन का दमन।
- धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में इसकी मृत्यु हो गई।

लॉर्ड लारेंस (1864-69)

- 1865 में इसके द्वारा भारत एवं यूरोप के बीच प्रथम समुद्री टेलग्राफ सेवा शुरू की गयी।
- अफगानिस्तान के संबंध में इसने अहस्तक्षेप की नीति अपनाई, जिसे "शानदार निष्क्रियता" के नाम से जाना जाता है।

लॉर्ड मेयो (1869-72)

- इन्होंने अजमेर में 1872 ई. में मेयो कॉलेज की स्थापना की।
- भारत में अंग्रेजों के समय में प्रथम जनगणना 1872 ई. में मेयो कॉलेज की स्थापना की।
- भारत में अंग्रेजों के समय में प्रथम जनगणना 1872 ई. में लॉर्ड मेयो क कार्यकाल में ही हुआ।
- एक अफगान ने 1872 में चाकू मार कर इसकी हत्या कर दी।

लॉर्ड नार्थब्रुक (1872-1876)

- पंजाब का प्रसिद्ध कूका आंदोलन इसी के समय में हआ।
- इसी के समय में स्वेज नहर खुल जाने से भारत एवं ब्रिटेन के बीच व्यापार में वृद्धि हुई।
- इन्होंने बड़ौदा के मल्हारराव गायकवाड़ भ्रष्टाचार के आरोप में पदच्युत कर मद्रास भेज दिया।
- **इन्होंने घोषणा किया**- "मेरा उद्देश्य करो को हटाना तथा अनावश्यक वैधानिक कार्रवाईयों को बंद करना है।"

लॉर्ड लिटन (1876-1880)

- यह एक प्रसिद्ध उपन्यासकार, निबंध लेखक एवं साहित्यकार था। साहित्यकार में इसे ओवन मैरिडिथ के नाम से जाता जाता था।
- 1 जनवरी 1877 को ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को कैसर-ए-हिन्द की उपाधि से सम्मानित करने के लिए दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया।

Scanned with OKEN Scanner

- 1878 में आर्म्स एक्ट पारित किया गया, जिसके जरिए भारतीयों द्वारा अपने पास हथियार रखने का अधिकार छीन लिया गया।
- 1878 में लिटन ने भारतीय समाचार-पत्र Act (वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट) पारित कर भारतीय समाचार-पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया। (सोमप्रकाश को प्रतिबंधित)

Note:- पायनियर अखबार ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट 1878 का समर्थन किया।

- इसने सिविल सेवा परीक्षाओं में प्रवेश की अधिकतम आयु सीमा घटाकर 19 वर्ष कर दी।
- लिटन ने अलीगढ़ में एक मुस्लिम-एंग्लों प्राच्य महाविद्यालय की स्थापना किया।

लॉर्ड रिपन (1880-84)

- इसे भारत में स्थानीय स्वशासन का जनक माना जाता है।
- इसके समय से 1881 से नियमित जनगणना की शुरूआत हुई। (प्रत्येक 10 वर्ष)
- रिपन के द्वारा ही सन् 1881 में प्रथम कारखाना अधि. लाया गया।
- इसने सिविल सेवा में प्रवेश की आयु 19 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दिया।
- इन्होंने 1882 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया।
- इल्बर्ट बिल को लेकर श्वेत विद्रोह हुआ।
- फ्लोरेस नाइटिंगेल ने रिपन को "भारत के उद्धारक" की संज्ञा दिया।

लॉर्ड डफरिन (1884-88)

- 28 December 1885 को बम्बई में ए.ओ.ह्यूम के नेतृत्व में काँग्रेस की स्थापना हुई।

लॉर्ड लैन्सडाउन (1888-94)

- 1891 में दूसरा कारखाना अधि. पारित हुआ।
- डूल्ड रेखा का निर्धारण हुआ।

लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894-98)

- इसने घोषणा की कि "हमने भारत को तलवार के बल पर जीता है और तलवार के बल पर ही इसे अधीन रखेंगे।"
- 1894 में इसने कहा कि "भारत हमारे साम्राज्य की धुरी है। यदि हमारे साम्राज्य का कोई अन्य राज्य अलग हो जाता है तो हम जीवित रह सकते हैं, लेकिन यदि हम भारत को खो देते हैं तो हमारे साम्राज्य का सूर्य अस्त हो जाएगा।"
- पूना में प्लेग का प्रकोप, चापेकर बंधुओं द्वारा दो ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या।
- अकाल की जाँच के लिए 'लायन आयोग' का गठन।
- 1895 में भारतीय व्यय की जाँच के लिए 'वेल्वी आयोग' का गठन।

लॉर्ड कर्जन (1899-1905)

- भारत का सबसे अलोकप्रिय वायसराय। रोनाल्डसे ने कर्जन की जीवनी लिखी।
- कर्जन के कार्यों को आधार बताते हुए गोखले ने इनको 'आधुनिक भारत का औरंगजेब' कहा।
- 1900 में 'पंजाब भूमि अन्याक्रमण एक्ट' पारित किया जिससे किसानों की भूमि गैर कृषकों के पास न जाए।
- 1903 में पूसा में एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई।
- कर्जन 1903 में फारस गया और फारस-अफगान झगड़े को सुलझाने के लिए मैकमोहन को नियुक्त किया।
- 1904 में 'ऑफिशियल सीक्रेट एक्ट' को पारित कर सरकारी नियंत्रण को और बढ़ा दिया।

Scanned with OKEN Scanner

- पुलिस प्रशासन के सुधार हेतु एंड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में पुलिस आयोग का गठन (1902) किया।
- सर टॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना (1902) तथा विश्वविद्यालय सुधार अधिनियम (1904) पारित।
- मॉनक्रीफ की अध्यक्षता में एक सिंचाई आयोग नियुक्त किया गया।
- कोऑपरेटिव क्रेडिट सोसायटीज एक्ट, 1904
- प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना।
- सर एंटनी मैकडोनाल्ड की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन।
- 1905 का बंगाल विभाजन।
- मुख्य सेनापति किचनर से विवाद के कारण कर्जन ने अगस्त 1905 में त्याग-पत्र दे दिया।
- भारत की शिक्षा व्यवस्था पर चोट करते हुए उसने कहा कि ''पूर्व एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ विद्यार्थी को कभी डिग्री नहीं मिलती।''
- कलकत्ता नगरपालिका की स्थिति पर व्यंग्य करे हुए इसने कहा कि ''मैं वायसराय के बाद कलकत्ता का महापौर बनना चाहूँगा।''
- कॉन्ग्रेस पर व्यंग्य करते हुए कहा कि ''कॉन्ग्रेस अब मरणशील है और मेरी इच्छा है कि मैं इसकी शांतिपूर्वक मृत्यु में सहयोग कर सकूँ।''

लॉर्ड मिंटो-II (1905-1910)

- 'मुस्लिम लीग' की स्थापना-1906
- खुदीराम बोस को फाँसी, बाल गंगाधर तिलक को राजद्रोह के आरोप में 6 वर्ष का कारावास 1908
- 'भारतीय परिषद् अधिनियम, 1909' अथवा मार्ले-मिंटो सुधार अधिनियम, 1909 पारित, जिसमें सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली की शुरुआत हुई।
- 1907 में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO) की स्थापना।
- सूरत में कॉन्ग्रेस का विभाजन 1907
- 1908 का समाचार-पत्र अधिनियम [न्यूजपेपर (इनसाइटमेंट टू अफेंसेस) एक्ट, 1908) पारित।
- वायसराय की कार्यकारिणी में पहला भारतीय सदस्य एस.पी. सिन्हा की नियुक्ति हुई।

लॉर्ड हार्डिंग-II (1910-16)

- इसके समय में ब्रिटेन के राजा जॉर्ज-V भारत आए। 1911 में दिल्ली दरबार का आयोजन हुआ।
- बंगाल विभाजन रद हुआ।
- 1912 में दिल्ली भारत की राजधानी बनी।
- दिसम्बर 1912 में इन पर दिल्ली में बम फेंका गया।
- प्रथम विश्वयुद्ध की शुरूआत हुई।
- लॉर्ड हार्डिंग को BHU का कुलाधिपति बनाया गया।
- बाम्बे क्रोनिकल - फिरोजशाह मेहता

  प्रताप - गणेश शंकर विद्यार्थी

Scanned with OKEN Scanner

लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916–1921)

- 1917 में शिक्षा पर सैडलर आयोग का गठन किया गया।
- रॉलेक्ट एक्ट पारित हुआ।
- जलियाँवाला बाग हत्याकांड (अमृतसर)
- खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन हुआ।
- प्रिंस ऑफ वेल्स 1921 में भारत आया।
- 1921 में मोपला विद्रोह हुआ।

लॉर्ड रीडिंग (1921-26)

- 1922 में चौरी-चौरा कांड (गोरखपुर, UP)
- 1923 में स्वराज पार्टी का गठन
- यह एक मात्र यहुदी वायसराय था।

लॉर्ड इरविन (1926-1931)

- February 1928 में साइमन कमीशन बम्बई पहुँचा।
- लाहौर अधिवेशन 1929 ''पूर्ण स्वराज''
- सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत।

लॉर्ड वेलिंगटन (1931-36)

- द्वितीय एवं तृतीय गोलमेज सम्मेलन हुआ।
- साम्प्रदायिक पंचाट की घोषणा की गई।
- बिहार में 1934 में भयंकर भूकंप आया।

लॉर्ड लिनलिथगो (1936-43)

- इसके समय में पहली बार चुनाव कराए गए।
- द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरूआत।
- भारत छोड़ो आंदोलन हुआ।

लॉर्ड वेवेल (1944-47)

- शिमला समझौता- 1945
- कैबिनेट मिशन योजना भारत आया।

लॉर्ड माउंटबेटन (मार्च 1947 से जून 1948)

- भारत को आजादी मिली।
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गर्वनर जनरल।

ज्ञान बिन्दु जी. एस. एकेडमी Dir Raushan Anand

Scanned with OKEN Scanner

4. 18वीं शताब्दी में स्थापित नवीन स्वायत्त राज्य

हैदराबाद

- यहाँ स्वतंत्र राज्य की स्थापना निजाम-उल-मुल्क ने 1724 में किया। इसका मूल नाम चिनकिलिच खाँ था (आसफजाही वंश)
- निजाम-उल-मुल्क मुहम्मदशाह रंगीला के प्रतिनिधि मुबारिज खाँ को सुकरखेड़ा (1724) के युद्ध में पराजित किया। तत्पश्चात् मुगल बादशाह ने निजाम-उल-मुल्क को "दक्कन का वायसराय" नियुक्त कर दिया और उसे "आसफजाह" की उपाधि प्रदान की।
- निजाम का संघर्ष मराठा पेशवा बाजीराव-I के साथ 1728 में पालरखेड़ा के युद्ध में हुआ जिसमें निजाम की पराजय हुई। इन्होंने मराठों के साथ मुंशी शिवगाँव की संधि किया जिसके तहत निजाम ने मराठों को चौथ एवं सरदेशमुखी नाम कर देना स्वीकार किया।
- 1748 में निजाम का निधन हो गया।
- 1798 में सहायक संधि के तहत अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया गया।
- 1948 में इसे पुलिस कारवाई (ऑपरेशन पोलो) के द्वारा भारत में मिलाया गया। (इस समय नवाब मीर उस्मान अली था।)

अवध

- **स्वायत राज्य की स्थापना**- सआदत खाँ 1722 (बुरहान-उल-मुल्क)
- **राजधानी**- फैजाबाद
- सआदत खाँ ने 1723 में नया राजस्व बंदोबस्त रेवेन्यू सेटलमेंट को लागू किया।
- मुहम्मद शाह ने इसे बुरहान-उल-मुल्क की उपाधि दिया।
- 1739 में मुहम्मदशाह ने नादिरशाह से लड़ने के लिए सआदत खाँ को दिल्ली बुलाया।
- 1739 मं सआदत खाँ की मृत्यु के बाद उसकी भतीजा तथा दामाद सफदरजंग (अबुल मंसूर खाँ अवध का नवाब बना। इन्हें मुगल शासक अहमदशाह अपना वजीर बनाया जिस कारण इसे नबाव वजीर के नाम से जाना जाता है।
- 1754 में अवध में सफदरजंग की मृत्यु हो गई, तत्पश्चात् इसका पुत्र शुजाउधौला शासक बना, जिसने मुगल बादशाह शाहआलम-II को शरण दी।
- 1761 में लड़े गए पानीपत के तृतीय युद्ध में शुजाउधौला ने अहमदशाह अब्दाली का साथ दिया।
- बक्सर के युद्ध में संयुक्त सेना का नेतृत्व शुजाउधौला किया।
- शुजाउधौला के बाद आसफुधौला (1775-1797) नवाब बना। इन्होंने अपनी राजधानी फैजाबाद से लखनऊ स्थानांतरित किया। इन्होंने लखनऊ में बड़ा 'इमामबाड़ा' बनवाया।
- **अंतिम नवाब**- वाजिद अली शाह

मैसूर (कर्नाटक)

- विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद मैसूर पर वोड्यार वंश का शासन था। इस वंश का अंतिम शासक कृष्णराज नाममात्र का शासक था। शासन की वास्तविक बागडोर दो मंत्रियों नंजराज था। नंगराज (वित्तमंत्री) और देवराज (सेनापति) के हाथों में थी।
- हैदर अली सैन्य सेवा में था।

Scanned with OKEN Scanner

- हैदरअली का जन्म 1721 में मैसूर के कोलार जिले में हुआ था।
- 1755 में ''डिंडीगुल'' के फौजदार के रूप में हैदरअली ने फ्रांसीसियों की सहायता से एक शस्त्रागार की स्थापना की।
- हैदरअली नंजराज को हटाकर 1761 में मैसूर का वास्तविक शासक बना और 1776 में वह स्वयं को राजा घोषित किया।

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-1769)

- यह युद्ध हैदरअली और अंग्रेजों के बीच हुआ जो 1769 ई. में मद्रास की संधि के तहत समाप्त हुआ।

द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84)

- यह युद्ध हैदर अली और अंग्रेजों के बीच हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व सर आयरकूट कर रहाथा इस समय गर्वनर जनरल वारेन हेस्टिंग्स था।
- 1781 में हैदर अली और अंग्रेजों के बीच, आयंरकूट के नेतृत्व में पोर्टोनोवा का युद्ध हुआ, जिसमें हैदर की हार हुई।
- द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान ही हैदर अली मारा गया। तत्पश्चात् उसका पुत्र टीपू सुल्तान शासक बना जो युद्ध को जारी रखा। यह युद्ध 1784 ई. में मंगलौर की संधि के तहत् समाप्त हुआ।

टीपू सुल्तान

- टीपू को कई भाषाओं जैसे- अरबी, फारसी, उर्दू एवं कन्नड़ का ज्ञान था। उन्होंने अपने नवीन प्रयोग से नई मुद्रा, नई माप-तौल की इकाई और नवीन संवत् (कैलेडर) का प्रचलन किया।
- टीपू सुल्तान ने अपने सैन्य संगठन को यूरोपीय पद्धति के अनुरूप संगठित किया।
- टीपू ने बादशाह की उपाधि धारण किया तथा अपने नाम का सिक्का जारी किया।
- टीपू सुल्तान फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित था। उन्होंने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया तथा ''जैकोबिन क्लब'' का सदस्य बन गया तथा अपने को ''नागरिक टीपू'' कहकर पुकारा।
- टीपू भारत का प्रथम शासक था, जो आर्थिक शक्ति को सैन्य शक्ति का नींव मानता था।
- विदेशी व्यापार तथा अपने समकालीन विदेशी राजाओं से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए टीपू ने फ्रांस, तुर्की, ईरान तथा पेगू (वर्मा) में अपने व्यापारिक दूत तथा अरब कुस्तुन्तुनिया, काबुल और मॉरीशस में अपने दूत मंडल भेजे।
- टीपू को सीधा-सादा दैत्य (Monster Pure and Simple) कहा जाता था।
- टीपू को उसकी वीरता के कारण 'शेर-ए-मैसूर' कहा जाता था। उनका मानना था कि ''शेर की तरह एक दिन जीना बेहतर है लेकिन भेड़ की तरह लंबी जिंदगी जीना अच्छा नहीं है।''
- टीपू को यह श्रेय दिया जाता है कि वह प्रथम व्यक्ति था जिसने रॉकेट का युद्ध में प्रयोग किया।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92)

- इस समय गर्वनर जनरल कार्नवालिस था। श्रीरंगपट्टनम की संधि के तहत यह युद्ध समाप्त हुआ।

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799)

- इस युद्ध के दौरान टीपू युद्ध करते हुए मारा गया। तत्पश्चात् अंग्रेजों ने श्रीरंगपट्टनम पर अधिकार कर लिया।
- अंग्रेजों ने मैसूर पर नियंत्रण स्थापित कर वोड्यार वंश के अल्पायु शासक कृष्णराज-II को सत्ता सौंपकर उससे सहायक संधि कर ली।

Scanned with OKEN Scanner

सिक्ख धर्म और अंग्रेज

- **संस्थापक**- गुरू नानक (1469-1539)
- **जन्म**- 15 अप्रैल, 1469 को ननकाना/तलवंडी (पाकिस्तान) में हुआ था।
- इनके पिता मेहता कालुराम, माता- तृप्ता देवी, पत्नी- सुलक्षणी थी। ये खत्री जाति से संबंधित थे।
- गुरू नानक को 1496 ई. में कार्त्तिक पूर्णिमा को अध्यात्मिक पुनर्जीवन का आभास हुआ।
- इन्होंने अनेक स्थानों पर संगत (धर्मशाला) और पंगत (लंगर) स्थापित किए।
- 1539 में गुरू नानक का करतारपुर में निधन हो गया।

2. गुरू अंगद (1539-52)

- **मूल नाम**- लहना था।
- गुरूमुखी लिपि का प्रचलन गुरू अंगद ने किया।
- लंगर व्यवस्था को स्थायी रूप प्रदान किया।

3. गुरू अमरदास (1552-74)

- सती प्रथा का विरोध किया।
- इन्होंने हिन्दुओं से अलग एक विवाह पद्धति लवन की शुरूआत की।
- सिक्ख धर्म की प्रचार के लिए 22 गधी की स्थापना किया।
- अकबर स्वयं अमरदास से मिलने गोइन्दवाल (पंजाब) गए तथा मुलाकात किया एवं उनके आग्रह पर तीर्थयात्रा कर समाप्त किया और गुरू पुत्री बीबी भानी को कई गाँव दान में दिए।
- अमरदास के पुत्र बाबा श्री चन्द्र ने गुरू के खिलाफ विद्रोह कर दिया। तत्पश्चात् अमरदास ने अपने शिष्य और दामाद रामदास को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

4. गुरू रामदास (1574-81)

- इन्होंने 1577 में अमृतसर नामक नगर की स्थापना किया।
- गुरू रामदास ने अपने तीसरे पुत्र अर्जुनदेव को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इसी के साथ गुरू का पद पैतृक हो गया यानि गुरू रामदास ने गुरू पद को पैतृक बना दिया।

5. गुरू अर्जुनदेव (1581-1606)

- सच्चा बादशाह।
- गुरू ग्रंथ साहिब/आदिग्रंथ की रचना किया।
- अर्जुनदेव ने 1589 में अमृतसर में स्वर्णमंदिर/हर मंदिर की स्थापना की।
- 1606 में जहाँगीर ने अपने विद्रोही पुत्र खुसरो को शरण देने का आरोप लगाकर फाँसी दे दिया।

6. गुरू हरगोविन्द (1606-1645)

- अमृतसर की किलाबंदी करवाया।
- अकाल तख्त (पूजा स्थल) बनवाया।
- सिक्ख को सैनिक शक्ति के रूप में ढ़ाला।
- कीरतपुर (कश्मीर) नामक नगर बसाया।

Scanned with OKEN Scanner

7. गुरू हरराय (1645-61)

- इसका दारा शिकोह से अच्छा संबंध था।

8. गुरू हरकिशन (1661-64)

- औरंगजेब को दिल्ली जाकर गुरूपद के बारे में समझाया।
- चेचक की बीमारी के कारण निधन हो गया।

9. गुरू तेज बहादुर (1664-75)

- **मूल नाम**- त्यागमल
- इसे बाकला-दा-बाबा कहा जाता था।
- पंजाब में तोरण-तारण नगर की स्थापना किया।
- औरंगजेब की धार्मिक नीति का खुले तौर पर विरोध किया।
- औरंगजेब अपने दरबार में बुलाकर इस्लाम कबुल करने को कहा, इन्कार करने पर फाँसी पर लटका दिया।
- इनका कथन था- ''सर दाद सिर्रे न दाद''
- आनंदपुर साहिब की स्थापना किया।

10. गुरू गोविंद सिंह (1675-1708)

- सिक्ख धर्म के 10वाँ एवं अंतिम गुरू थे।
- जन्म 1666 में पटना में हुआ था।
- पिता- गुरू तेज बहादुर; पत्नी- सुन्दरी एवं जीतू; पुत्र- 4 (अजीत, जुझारू, जोरावर, फतेह)
- माता- गुदरी बाई।
- सिक्खों के लिए पंचककार- केश, कंघा, कृपाण, कच्छा और कड़ा को अनिवार्य बना दिया तथा नाम के अंत में सिंह जोड़ने को कहा।
- इन्होंने ''आदिग्रंथ'' को वर्त्तमान रूप प्रदान किया।
- पाहुल प्रणाली की शुरूआत किया।
- 1699 में खालसा पंथ की स्थापना किया।
- जफरनामा की रचना किया।
- इनके दो पुत्र फतह सिंह एवं जोरावर सिंह को सरहिन्द के मुगल फौजदार वजीर खाँ ने दीवार में चिनवा दिया।
- इनकी हत्या 1708 में नांदेड़ (महाराष्ट्र) नामक स्थान पर गुल खाँ नामक पठान ने कर दिया।
- गुरू गोविन्द सिंह के निधन के पश्चात् गुरू का पद समाप्त हो गया। अब नेता का पद अस्तित्व में आया यह पद बंदा बहादुर को मिला (लक्ष्मण दास)
- बंदा बहादुर को 1775 में फर्रूखसियर ने फाँसी पर लटका दिया। इनकी हत्या के बाद सिक्ख राज्य का उत्सकर्ष थम गया, लेकिन शीघ्र ही मुगल नेतृत्व की अक्षमता और विदेशी आक्रमणकारी नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के लगातार आक्रमण से उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर थोडे समय के लिए मंद पड़े सिख राज्यों का पुन: उत्कर्ष हुआ।
- फैजलपुर के कपूर सिंह के नेतृत्व में पुन: पंजाब के सिख कृषकों, जो पृथक-पृथक जत्थों में बँटे थे को संग्रठित कर एक ऐसे दल के रूप में विकसित किया गया, जो ''दल खालसा'' के रूप में अस्तित्व में आया।
- कपूर सिंह के निधन के पश्चात् ''दल खालसा'' का नेतृत्व ''जस्सा सिंह अहलूवालिया'' ने संभाला।

Scanned with OKEN Scanner

- जस्सा सिंह के नेतृत्व में ही सिख 12 स्वतंत्र मिसलो या जत्थों में संगठित हो चुके थे।
- 1753 में ''दल खालसा'' ने बाहरी आक्रमणों से उत्पन्न अव्यवस्था के हल के लिए ''राखी प्रथा'' आरंभ की।
- राखी प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक गाँव से उपज का 1/5 भाग लेकर ''दल खालसा'' उसकी सुरक्षा का प्रबंध करता था।
- बारह मिसलों में से ''सुकरचकिया मिसल'' में जन्में रणजीत सिंह काफी प्रसिद्ध हुए। इन्हें इतिहास में ''शेर-ए-पंजाब'' के नाम से जाना जाता है।
- मिसल अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ ''समान'' होता है।

	मिसल		**नेता/संस्थापक**
1.	फेजलपुलिया/सिंहपुरिया	–	नवाब कपूर सिंह
2.	अहलूवालिया	–	जस्सा सिंह, अहलूवालिया
3.	सुकरचकिया	–	चरत सिंह
4.	भंगी	–	सरदार हरिसिंह
5.	कन्हैया	–	जयसिंह
6.	रामगदिया	–	जस्सा सिंह इच्छोगीलिया
7.	फलकिया	–	चौधरी फूल सिंह
8.	निशान वालिया	–	संगत सिंह व मोहर सिंह
9.	करोड़ सिधिंया	–	बघेल सिंह
10.	शहीद मिसल/निहंग	–	दीप सिंह
11.	नक्कई	–	सरदार हीरा सिंह
12.	डल्लेवालिया	–	गुलाब सिंह

रणजीत सिंह (1780-1839)

- पाँच विवाह एवं 7 पुत्र।
- रंजीत सिंह का जन्म 1780 में सुकरचकिया मिसल के प्रमुख महासिंह के यहाँ हुआ था।
- महासिंह की मृत्यु के बाद 1792 में रंजीत सिंह 12 वर्ष की आयु में सुकरचकिया मिसल के प्रमख बने।
- रंजीत सिंह ने 1799 में लाहौर और 1802 में अमृतसर पर कब्जा कर लिया।
- रंजीत सिंह ने अपनी राजधानी ''लाहौर'' को बनाया।
- रंजीत सिंह ने अपनी सेना का गठन यूरोपीय ढंग से किया। इनके सैन्य संगठन को भारतीय पृष्ठभूमि में ''ब्रिटिश-फ्रांसीसी सैन्य व्यवस्था'' कहा जाता था।
- कहा जाता है कि रंजीत सिंह की फौज एशिया की दूसरी सबसे अच्छी फौज थी। पहला स्थान BEIC की फौज का था। विदेश मंत्री- फकीर अजीजुद्दीन एवं वित्त मंत्री- दीनानाथ
- रंजीत सिंह का राज्य चार सूबों (प्रांत) में बँटा था- पेशावर, कश्मीर, मुल्तान और लाहौर।
- रंजीत सिंह ने 1809 में राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से चार्ल्स मेटकॉफ से ''अमृतसर की संधि'' की।
- अफगानिस्तान के शासक जमानशाह (1798) ने रंजीत सिंह को राजा की उपाधि दिया।
- रंजीत सिंह को कोहिनूर हीरा अफगानिस्तान के शासक शाहशुजा से प्राप्त हुआ।

Scanned with OKEN Scanner

- फ्रांसीसी यात्री विक्टर जाकमाँ ने रंजीत सिंह की तुलना ''नेपोलियन'' से की थी।
- 1839 में रंजीत सिंह का निधन हो गया।
- **उत्तराधिकारी-** खड़ग सिंह (रंजीत सिंह का पुत्र) (1839-40)
  नौनिहाल सिंह (खगड़ सिंह का पुत्र) (1840-41)
  शेर सिंह (रंजीत सिंह का पुत्र) (1841-43)
  दिलीप सिंह (रंजीत सिंह का पुत्र) (1843-49)
- आंग्ल-सिक्ख संघर्ष दिलीप सिंह के काल में हुआ।

प्रथम आंग्ल सिक्ख संघर्ष (1845-46)

- इस संघर्ष के समय भारत का गर्वनर जनरल लार्ड हार्डिंग-I तथा अंग्रेजी सेना का प्रमुख सर ह्यूगफ था। ''लाहौर की संधि'' के तहत यह संघर्ष समाप्त हुआ।
- आगे चलकर दिसंबर 1846 में भैरोवाल की संधि हुई जिसके अनुसार दिलीप सिंह के वयस्क होने तक ब्रिटिश सेना को लाहौर में तैनात कर दिया गया।

द्वितीय आंग्ल सिक्ख संघर्ष (1848-49) लॉर्ड डलहौजी

- रामनगर का युद्ध (1848), चिलियाँवाला का युद्ध (1849) द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध से संबंधित था।
- लॉर्ड डलहौजी के शासनकाल में चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने फरवरी 1849 में गुजरात में अंतिम रूप से सिख सेना को परास्त किया।
- गुजरात युद्ध जीतने के पश्चात् डलहौजी ने मार्च 1849 में पंजाब को अंग्रेजी राज्य के अंतर्गत विलय कर लिया।
- महाराजा दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने लगभग 5 लाख रूपया वार्षिक पेंशन पर शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेज दिया।
- दिलीप सिंह से कोहिनूर हीरा लेकर महारानी विक्टोरिया को भेज दिया गया।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (21 जून 1948 से 26 जनवरी 1950 तक)

- स्वतंत्र भारत के प्रथम और अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल।

Scanned with OKEN Scanner

5. 1857 का विद्रोह

1857 के विद्रोह के समय मुगलबादशाह के पद पर बहादुरशाह-II था। इस समय भारत के गर्वनर जनरल लॉर्ड कैनिंग थे। इस समय इंग्लैंड के प्रधानमंत्री लॉर्ड पार्मस्टन थे, जबकि विरोधी दल का नेता डिजरैली था।

1857 का विद्रोह

↓ स्वरूप/प्रकृति ↓ कारण ↓ प्रसार/नेतृत्वकर्त्ता ↓ असफलता के कारण ↓ परिणाम

- **स्वरूप/प्रकृति**
- **भारतीय विद्वानों का मत-**

1. यह सुनियोजित ढंग से किया गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था- **B. D. सावरकर**
2. यह न तो प्रथम, न राष्ट्रीय और न स्वतंत्रता संग्राम था- **R. C. मजुमदार**
3. यह जनक्रांति था- **रामविलाश शर्मा**
4. यह राष्ट्रीय विद्रोह नहीं था, क्योंकि इस समय तक भारत में राष्ट्रवाद का विकास नहीं हुआ था- **पंडित नेहरू**
5. अगर यह राष्ट्रीय संग्राम नहीं था तो इसे सिपाही विद्रोह कहना भी गलत होगा- S. N. सेन

Note:- 1857 के विद्रोह के सरकारी इतिहासकार S. N. सेन थे जिन्होंने "1857" नाम पुस्तक की रचना की।

विदेशी विद्वानों का मत

1. यह एक राष्ट्रीय विद्रोह था- **डिजरैली**
2. यह एक सैनिक सिपाही विद्रोह था- **जॉन सीले, मार्लेसन, ट्रेवेलियन, लॉरेंस**
3. यह सभ्यता एवं बर्बरता के बीच का युद्ध है- **T. R. Homes**
4. यह धर्मान्धों का ईसाइयों के विरूद्ध युद्ध था- **L. E. R. रीज**
5. यह हिन्दुओं और मुलसमानों का अंग्रेजों के खिलाफ षड्यंत्र था- **जेम्स आउट्रम & W. टेलर**

निष्कर्षत: यह कह सकते हैं कि यह पूर्णत: न सिपाही विद्रोह था, न जनक्रांति थी बल्कि कुछ सिपाही और कुछ भारतीयों द्वारा किया गया एक क्रांति था। क्रांति इसे हम इस लिहाज से कह सकते हैं क्योंकि 1857 के विद्रोह में भारत में आमूलचूल परिवर्त्तन किया। जैसे कि 1857 के विद्रोह के पूर्व जहाँ भारत में अंग्रेजी कंपनी का शासन था उसे समाप्त कर अंग्रेजी सरकार के प्रत्यक्ष तौर पर भारत में शासन की स्थापना हुई

- **कारण**
- **राजनीतिक कारण:-**

1. राबर्ट क्लाईव द्वारा लागू किया गया द्वैध शासन व्यवस्था जिसने भारत में बड़े-बड़े अकाल को जन्म दिया।
2. वारेन हेस्टिंग्स और लॉर्ड कार्नवालिस की आक्रामक नीति।
3. लॉर्ड वेलेज्ली का सहायक संधि
4. लॉर्ड हेस्टिंग्स का Forword Policy नीति।
5. लॉर्ड डलहौजी का राजहड़प नीति।

- **सामाजिक और धार्मिक कारण:-**

1. लॉर्ड विलियम बेंटिक के द्वारा समाप्त किया गया सती प्रथा और ठगी प्रथा।
2. लॉर्ड कैनिंग के द्वारा पारित किया गया हिन्दु विधवा पुनर्विवाह अधिनियम।

Scanned with OKEN Scanner

3. लॉर्ड डलहौजी ने 1849 ई. में यह घोषणा किया कि बहादुर शाह जफर का उत्तराधिकारी लाल किला के बजाय कुतुबमीनार जैसे छोटे स्थान पर रहेंगे।
4. लॉर्ड डलहौजी ने 1850 AD में धार्मिक अयोग्यता अधिनियम पास किया।
5. लॉर्ड कैनिंग ने 1856 AD में सैनिक अधिनियम पास किया।
6. लॉर्ड कैनिंग ने 1856 AD में यह घोषणा किया कि बहादुशाह जफर के उत्तराधिकारी बादशाह नीं कहलाएँगे बल्कि राजा या शहजादा कहलाएँगे।

■ **आर्थिक कारण:-**

ब्रिटिश सरकार के द्वारा कई प्रकार के आर्थिक नीति जैसे- स्थायी बंदोबस्त, रैयतवादी व्यवस्था, महालवाड़ी व्यवस्था लागू किये गए। इन सभी व्यवस्थाओं के अन्तर्गत अंग्रेजी सरकार ने भारतीयों का शोषण किया।

■ **सैन्य कारण:-**

अंग्रेजी कम्पनी की सेना में भारतीय और यूरोपीय का अनुपात 5 : 1 था। इसके बावजूद भारतीय सैनिकों को न अधिक सुविधाएँ और न ही अधिक पगार दिया जाता था। साथ-ही-साथ भारतीय सैनिकों के साथ अभद्र व्यवहार भी किया जाता था। उन्हें कुत्ता या सुअर कहकर भी पुकारा जाता था। साथ-ही-साथ भारतीय सैनिक उच्च पद को ग्रहण भी नहीं कर सकते थे।

■ **तात्कालिक कारण (चर्बीयुक्त कारतुस का शामिल होना)**

अंग्रेजी कम्पनी ने Dec. 1856 AD में अपनी सेना में ब्राउन बेस राईफल के जगह Dec. 1856 में एनफिल्ड राईफल को शामिल किया। इस राईफल को चलाने हेतु प्रशिक्षण दमदम (बंगाल), अंबाला (पंजाब) और सियालकोट (पाकिस्तान) में दिया जाता था। एनफिल्ड राईफल में कारतुस भरने से पहले उसके खोल को मुँह से खोलना होता था। कारतुस के ऊपरी खोल के विषय में यह अफवाह फैली की इसमें गाय और सुअर की चर्बी मिली हुई थी। जो हिन्दु और मुसलमानों दोनों धर्मों के लिए सही नहीं था।

जब इस बात की खबर बंगाल के बैरखपुर के 34वीं NI के सिपाही मंगल पाडे को लगी तो उन्होंने एनफिल्ड राईफल को प्रयोग में लाने से इन्कार कर दिया और अपने बड़े अधिकारी जनरल ह्यूरसन और जनरल बाग की 29 March, 1857 को हत्या कर दी।

इसी कारण मंगल पांडे को पकड़कर 8 Apr. 1857 को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। 1857 के विद्रोह में शहीद होनेवाले प्रथम नेता मंगल पांडे थे। जो 1857 के विद्रोह के शुरू होने से पहले ही शहीद हो गए।

■ **विद्रोह का आरंम्भ**

1857 के विद्रोह की शुरूआत 10 May 1857 से मेरठ (UP) से हुई।

■ **प्रसार और नेतृत्वकर्त्ता :**

संपूर्ण भारत 1857 के विद्रोह में प्रभावित नही था बल्कि भारत का कुछ हिस्सा जैसे- मध्य-भारत, उत्तर-भारत प्रभावित था।

1. **दिल्ली:-** इस क्षेत्र में 1857 के विद्रोह की शुरूआत 12 May 1857 से मानी जाती है। इस क्षेत्र से नेतृत्वकर्त्ता मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर था। जबकि सैन्य नेतृत्व बख्त खाँ के द्वारा किया गया था। दिल्ली के क्षेत्र में विद्रोह को दबाने हेतु निकलसन और हड्सन को भेजा गया जिसमें विद्रोह को दबाते हुए निकलसन मारा गया जबकि हड्सन ने Sep. 1857 आते-आते विद्रोह को दबा दिया।
2. **अवध और लखनऊ:-** इस क्षेत्र में विद्रोह की शुरूआत June 1857 से हुई मानी जाती है। इस क्षेत्र से विद्रोह का नेतृत्व बेगम हजरत महल ने की। लखनऊ के क्षेत्र में विद्रोह को दबाते हुए हेनरी लॉरेंस मारे गए जबकि विद्रोह को कैंपबेल के द्वारा दबाया गया। बेगम हजरत महल विद्रोह के समाप्ति के अंतिम दौर में

Scanned with OKEN Scanner

भागकर नेपाल चली गयी।

3. **कानपुर:-** इस क्षेत्र में विद्रोह की शुरूआत June 1857 से हुई मानी जाती है। इस क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व नाना साहेब ने किया। नाना साहेब का मूल नाम घोदु पंत था। नाना साहेब के प्रमुख सलाहकार उजीमुल्ला थे जिन्होंने नाना साहेब के पेंशन की पैरवी की कानपुर से सैन्य नेतृत्व तात्या-टोपे ने सम्भाला तात्या टोपे का मूल नाम रामचन्द्र पांडुरंग था। तात्या टोपे अपने मित्र के धोखाधड़ी के कारण मारे गये। विद्रोह के अंतिम दौर में नाना साहेब भागकर नेपाल चले गए। इस क्षेत्र में अंग्रेज सेनापति कैंपबेल ने विद्रोह को दबाया।

4. **बिहार:-** बिहार में 1857 के विद्रोह की शुरूआत देवघर के रोहिनी गाँव से 12 June 1857 से हुई मानी जाती है। पटना के क्षेत्र में 1857 के विद्रोह की शुरूआत 3 July 1857 से हुई मानी जाती है। पटना के क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व पुस्तक विक्रेता पीर अली के द्वारा किया गया था। पटना के पश्चात् यह विद्रोह दानापुर, मुजफ्फरपुर, आरा पहुँचा। पूरा बिहार इस विद्रोह से प्रभावित नहीं था।

बिहार से इस विद्रोह का नेतृत्वकर्त्ता आरा के जगदीशपुर के जमींदार वीर कुँवर सिंह को माना जाता है, इन्होंने लगभग 80 वर्ष की उम्र में नाना साहेब और रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर अंग्रेजों को कड़ी शिकस्त दी। वीर कुँवर सिंह का संघर्ष अंग्रेज अधिकारी ली-ग्रांड के साथ 23 Apr. 1858 को हुआ। इस संघर्ष में वीर कुँवर सिंह ने लिग्रांड को पराजित किया। इसी कारण प्रत्येक वर्ष 23 Apr. को विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस संघर्ष के दौरान ही वीर कुँवर सिंह बूरी तरह घायल हुए। कुछ ही दिनों के पश्चात् उनका निधन हो गया। तत्पश्चात् विद्रोह का नेतृत्व कुँवर सिंह के भाई अमर सिंह ने सँभाला। बिहार के क्षेत्र में विद्रोह को दबाने का श्रेय विलियम टेलर और विंसेट आयर को जाता है।

- **झाँसी और ग्वालियर**- इस क्षेत्र से 1857 के विद्रोह का नेतृत्व रानी लक्ष्मीबाई के द्वारा किया गया है। उनका जन्म बनारस में जबकि समाधि स्थल ग्वालियर में है। इनके बचपन का नाम मनु या मणिकर्णिका थी। रानी लक्ष्मीबाई जनरल ह्यूरोज से लड़ती हुई 17 June 1858 को मारी गई। जनरल ह्यूरोज ने रानी लक्ष्मीबाई को एक मर्द की संज्ञा दिया। झाँसी के क्षेत्र में विद्रोह को दबाने का श्रेय जनरल ह्यूरोज को जाता है।
- **फैजाबाद (अयोध्या):-** इस क्षेत्र से 1857 के विद्रोह का नेतृत्व मौलवी अहमदुल्ला के द्वारा किया गया। यह मूल रूप से दक्षिण भारत का रहने वाला था। मौलवी अहमदुल्ला अंग्रेजी सरकार का कट्टर दुश्मन था। इस क्षेत्र में विद्रोह को दबाने का श्रेय कैंपवेल को जाता है। हाल ही के दिनों में फैजाबाद का नाम बदलकर अयोध्या कर दिया गया है।
- **इलाहाबाद और बनारस:-** इस क्षेत्र से विद्रोह का नेतृत्व लियाकत अली ने किया, जबकि विद्रोह को दबाने का श्रेय कर्नल नील को जाता है।
- **बरेली:-** इस क्षेत्र से विद्रोह का नेतृत्व खान बहादुर खाँ के द्वारा किया गया जबकि विद्रोह को कैंपवेल ने दबाया। 1857 के विद्रोह का नेतृत्व राजस्थान में ठाकुर कौशल सिंह, महाराष्ट्र से रंगोजी बापू, गोरखुपर से गजाधर सिंह, मथुरा से देवी सिंह तथा असम से मणिराम दत्त ने किया।
- **सफलता के कारण:-** इस विद्रोह के असफलता के कई कारण थे-

1. केंद्रीय स्तर पर इसका कोई नेतृत्वकर्त्ता नहीं था।
2. इसका कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं था।
3. इस विद्रोह की शुरूआत भले ही सिपाहियों के द्वारा की गई हो लेकिन सिपाही वर्ग के लोग भी पूर्णत: शामिल नहीं था। इस विद्रोह में अगर अवध का सिपाही विद्रोही था तो वहीं पंजाब और गोरखा सिपाही अंग्रेजों का साथ दे रहा था।
4. इस विद्रोह में जहाँ एक ओर अवध के नबाव विद्रोही था तो वहीं दूसरी ओर हैदराबाद के निजाम, इंदौर के

Scanned with OKEN Scanner

होल्कर, बिहार के दरभंगा के महाराज, भोपाल के राजा, कश्मीर के महाराज, ग्वालियर के सिंधिया इत्यादि अंग्रेजों का साथ दे रहे थे। इसी घटना को लेकर लॉर्ड कैनिंग ने कहा कि- "अगर 1857 के विद्रोह में देशी रियासत साथ नहीं देता तो अंग्रेजी कंपनी भारत में अपने शासन का बचाव नहीं कर पाती।"

5. इस विद्रोह में शिक्षित और मध्यम वर्गीयलोग अपने आप को अलग रखा।

■ **परिणाम:-**

इसके कई सारे परिणाम है, जो निम्न हैं-

1. इस विद्रोह के पश्चात् भारत में अंग्रेजी कंपनी के शासन की समाप्ति हुई तथा भारत में प्रत्यक्ष तौर पर अंग्रेजी सरकार के शासक की स्थापना हुई।
2. इस विद्रोह की समाप्ति के पश्चात् 1858 का भारत परिषद् अधिनियम आया जिसने भारत के गर्वनर जनरल का नाम बदलकर वायसराय कर दिया।
3. इस विद्रोह के पश्चात् मुगल बादशाह के पद को समाप्त कर दिया गया।
4. विद्रोह के पश्चात् सेना के पुनर्गठन हेतु पील कर्म आयोग का गठन किया गया। जिसने अंग्रेजी सरकार की सेना में बंगाल और अवध के सैनिकों की संख्या को घटाया वहीं दूसरी ओर पंजाब और गोरखा के सैनिकों की संख्या को बढ़ाया।
5. इस विद्रोह के पश्चात् भारत में राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

महत्वपूर्ण पुस्तकें

पुस्तक		लेखक
1. Our Crisis	–	W. Taylor
2. Our Indian Musalman	–	W. W. Hunter
3. 1857	–	S. N. Sen
4. First War of Indian Independent	–	B. D. Sawarkar
5. Durgesh Nandani	–	Bakim Chandra Chatergy
6. 1857 the Great Revolt	–	Ashok Mehta

Scanned with OKEN Scanner

6. 19वीं - 20वीं शताब्दी में सामाजिक, धार्मिक सुधार आंदोलन

19वीं-20वीं शताब्दी में भारत में सामाजिक, धार्मिक सुधार आंदोलन की शुरूआत हुई। 19वीं शताब्दी का सामाजिक, धार्मिक सुधार आंदोलन नारी केन्द्रित था। वहीं 20वीं शताब्दी का सुधार आंदोलन निम्न जाति केन्द्रित था। इस आंदोलन की शुरूआत भारत के बंगाल प्रांत से हुई मानी जाती है। बंगाल प्रांत से आंदोलन को शुरू करने का श्रेय राजाराम मोहन राय को जाता है।

- **राजा राममोहन राय**- राजा राममोहन राय का जन्म 1772 AD में कलकत्ता प्रेसिडेंसी में हुआ था। इनका समकालीन मुगल बादशाह अकबर-II था। जिन्होंने राममोहन राय को राजा की उपाधि प्रदान की। राजा राममोहन राय के द्वारा ही 19वीं शताब्दी में बंगाल के क्षेत्र से सामाजिक, धार्मिक सुधार आन्दोलन की शुरूआत की गयी। जिस कारण उन्हें सुधार आंदोलन का पिता, नवप्रभात का तारा, आधुनिक भारत का पिता इत्यादि उपनाम से जाना जाता है।

  राजा राममोहन राय एकेश्वरवाद यानि एक ईश्वर की पूजा पर बल दिया करते थे। एकेश्वरवाद विचारधारा के प्रचार-प्रसार करने हेतु राजा राममोहन राय ने 1815 ई. में कलकत्ता में आत्मीय सभा की स्थापना किया। राजा राममोहन राय मूर्त्ति पूजा का विरोधी हुआ करता था। इन्होंने 1821 ई. में सती प्रथा का विरोध करने हेतु बंग्ला भाषा में संवाद कौमुदी नामक ग्रंथ की रचना किया। राजा राममोहन राय ने 1828 AD में कलकत्ता में ब्रह्मसमाज की स्थापना किया और इसके माध्यम से सती प्रथा का विरोध किया। इन्हीं के प्रयास से 1829 AD में लॉर्ड विलियम बेंटिक ने भारत में सती प्रथा को समाप्त किया।

  राजा राममोहन राय भारतीयों को शिक्षित करने हेतु 1817 में हिन्दु कॉलेज और 1825 में वेदांत कॉलेज की स्थापना किया। राजा राममोहन राय अकबर-II का प्रतिनिधित्व करने के लिए इंगलैंड गए जहाँ 1833 ई. में ब्रिस्टल नामक शहर में इनका निधन हो गया। राजा राममोहन राय के निधन के पश्चात् ब्रह्म समाज का नेतृत्व देवेन्द्र नाथ टैगोर ने सम्भाला।

  देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 1839 ई. में तत्व बोधिनी सभा की स्थापना किया। इन्होंने इस सभा के प्रचार-प्रसार हेतु तत्व बोधिनी नामक पत्रिका का संपादन किया।

  बाद के दिनों में ब्रह्म समाज में दो बार विभाजन हुआ। ब्रह्म समाज में पहली बार विभाजन 1866 ई. में हुआ और ब्रह्म समाज से अलग भारतीय ब्रह्म समाज की स्थापना हुई। जिसके संस्थापक केशव चन्द्र सेन को माना जाता है। ब्रह्म समाज में दूसरी बार विभाजन 1878 ई. में हुआ। तत्पश्चात् साधारण ब्रह्म समाज अस्तित्व में आया। इसके संस्थापक आनंद मोहन बोस माने जाते है।

  राजा राममोहन राय ने फारसी भाषा में मिरात-उल-अखबार, तोहफात-उल-मुहावदीन आदि ग्रंथ की रचना किया।

- **थियोसोफिकल सोसाईटी**- इस सोसाईटी की स्थापना 1875 AD में न्यूयार्क मं मैडम ब्लाटवस्की और कर्नल अल्काट ने किया। इसका मुख्यालय 1882 AD में मद्रास के अडियार को बनाया गया। श्रीमती एनी बेसेन्ट 1889 AD में इंग्लैंड में थियोसोफिकल सोसाईटी की सदस्य बनी। श्रीमती एनी बेसेंट 1893 ई. में भारत आयी और उन्होंने ही भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी को लोकप्रिय बनायी।

  श्रीमती एनी बेसेंट 1898 ई. में सेंट्रल हिन्दु कॉलेज की स्थापना की। यही कॉलेज 1916 ई. में बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के नाम से जाना गया जिसका संस्थापक मदन मोहन मालवीय को माना जाता है। हाल-ही के दिनों में 2015 ई. में अटल बिहारी वाजपेयी के साथ मरणोपरांत मदन मोहन मालवीय को भारत रत्न पुरस्कार दिया गया। 1916 ई. में मद्रास के क्षेत्र में श्रीमती एनी बेसेन्ट ने होमरूल लींग आंदोलन का संचालन की। यही आंदोलन एनी बेसेंट को काफी अधिक लोकप्रिय बनाया। एनी बेसेंट की लोकप्रियता को देखते हुए कांग्रेस ने 1917 के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष एनी बेसेंट को नियुक्त किया। श्रीमती एनी बेसेंट काँग्रेस की अध्यक्षता करने वाली प्रथम महिला बनी।

- **आर्य समाजः**- इसकी स्थापना 1875 ई. में मुंबई में की गई। बाद के वर्षों में 1877 AD में इसका मुख्यालय लाहौर को बनाया गया। आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती के द्वारा की गई थी। इनका जन्म 1824 ई. में गुजरात में हुआ। जबकि निधन 1883 ई. में राजस्थान के अजमेर में हुआ। इनके गुरू स्वामी बिरजानंद थे। इनका मूल नाम

Scanned with OKEN Scanner

मूलशंकर था।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिन्दु धर्म और समाज में सुधार करने का प्रयास किया। जिस कारण इन्हें हिन्दु लुथर भी कहा जाता है। इनके द्वारा शुद्धि आंदोलन और गौ रक्षा आंदोलन चलाया गया। दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक की रचना की है। इन्होंने ही वेदों की ओर लौटो और भारत, भारतीयों के लिए है नारा दिया है।

स्वामी दयानंद सरस्वती प्रथम समाजक सुधारक थे जिन्होंने शुद्र एवं स्त्री को वेद पढ़ने और शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति दी। स्वामी दयानंद सरस्वती ने ही पहली बार स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया और हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया।

दयानंद सरस्वती का सहयोगी लाला हंसराज ने 1886 ई. में लाहौर में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज (DAV) की स्थापना किया। कालांतर में दयानंद सरस्वती के ही सहयोगी स्वामी श्रद्धानंद ने हरिद्वार में 1902 AD में गुरूकुल कांगरी विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया।

■ **स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण मिशन-**

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 Jan. 1863 AD को कलकत्ता प्रेसिडेंसी में हुआ था। इनके जन्म दिवस 12 Jan. को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है इनके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। इनके पिता विश्वनाथ दत्त जबकि माता भुवनेश्वरी देवी थी। इनके गुरू रामकृष्ण परमहंस थे जिन्हें गदाधर चटोपाध्याय के नाम से भी जाना जाता है, 'शारदामणि रामकृष्ण परमहंस' की पत्नी थी।

1893 AD में अमेरिका के शिकागो शहर में प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। इस सम्मेलन में भारत की तरफ से प्रतिनिधित्व स्वामी विवेकानंद ने किया। इसी सम्मेलन में भाग लेने के लिए नरेन्द्र नाथ दत्त जब अमेरिका जाने वाले थे तो उनका नाम बदलकर महाराजा खेतरी (राजस्थान) ने स्वामी विवेकानंद रखा। इस सम्मेलन को संबोधित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने विश्व के सभी धर्मों में एकता स्थापित करने की बात कही। इस सम्मेलन को संबोधित करते हुए ही विवेकानंद ने कहा कि- ''यदि पश्चिम के भौतिकवाद और पूर्व के आध्यात्मवाद को मिला दिया जाए तो यह मानव जाति के कल्याण का सर्वोत्तम मार्ग होगा।''

1893 ई. के शिकागो सम्मेलन के पश्चात् स्वामी विवेकानंद काफी लोकप्रिय हुए। तत्पश्चात् उन्होंने अपनी विचारधारा को प्रचारित और प्रसारित करने हेतु 1896 ई. कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। बाद के दिनों में इसकी शाखाएँ अन्य शहरों एवं विदेशों में खोली गयी। अंतत: 4 July 1902 AD को कलकत्ता के बेलुर मठ में स्वामी विवेकानंद का निधन हो गया। इनकी एक मूर्त्ति तमिलनाडु राज्य में है, जिसे विवेकानंद रॉक कहा जाता है।

विवेकानंद के प्रमुख कथन

(i) आज हिंदु धर्म मतछुओवाद बन गया है।

(ii) हमारे धर्म रसोईघर में है, हमारे भगवान खाना बनाने के बर्त्तनों में है।

(iii) विवेकानंद ने कहा है कि- ''जब तक करोड़ो व्यक्ति भुखे और अज्ञानी हैं, तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही मानता हूँ, जो उन्हीं के खर्चों पर शिक्षा ग्रहण करता है परंतु उनकी परवाह बिल्कुल नहीं करता है।

(iv) विवेकानंद का मानना था कि- ''धर्म ना पुस्तकों में है ना बौद्धिक विकास में, ना सिद्धांत में, ना तर्क में बल्कि धर्म आत्मज्ञान में है।

■ स्वामी विवेकानंद ने ज्ञानयोग, कर्मयोग, राजयोग, प्रबुद्ध भारत, वर्त्तमान भारत, वेदांत फिलॉस्फी इत्यादि ग्रंथों की रचना किया।

■ **प्राथना समाज:-**

इसकी स्थापना 1867 ई. में केशव चन्द्रसेन की प्रेरणा से आत्माराम पांडुरंग के द्वारा किया गया। महाराष्ट्र के क्षेत्र में प्रार्थना समाज को लोकप्रिय बनाने का श्रेय महादेव गोविंद राणाडे को दिया जाता है। इन्हें तीक्ष्ण बुद्धि के कारण महाराष्ट्र का शुकरात भी कहा जाता है, इन्होंने पूना में 1867 AD में पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना किया। राणाडे ने ही दक्कन एजुकेशन सोसाईटी महाराष्ट्र विधवा पुनर्विवाह सभा की स्थापना करवाया। इनके शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले ने 1905 AD में इंडिया सर्वेट सोसाईटी नामक संगठन की स्थापना करवाया।

Scanned with OKEN Scanner

- पंडित रमाबाई ने आर्य महिला समाज और शारदा सदन नामक संगठन की स्थापना की।
- **यंग बंगाल आंदोलन**- इस आंदोलन की शुरूआत 1826 AD में विवियन डेरेजियो के द्वारा की गयी है। यह बंगाल से था। इनके ऊपर फ्रांसीसी क्रांति 1789 का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। इन्हें आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि भी कहा जाता है। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने वियिन डेरेजियो को हमारी सभ्यता का पिता और हमारी सभ्यता का अग्रदुत कहकर पुकारा है। युवा बंगाल आंदोलन का मुख्य उद्देश्य निम्न था।
  1. प्रेस की स्वतंत्रता
  2. जमींदारों से किसानों की रक्षा
  3. उच्च पदों पर भारतीयों को शामिल किया जाना etc.

दलित समाज सुधार आंदोलन

- **ज्योतिबा फूले:**- दलित समाज में समाज सुधार आंदोलन चलाने हेतु 1873 AD में ज्योतिबा फूले ने सत्य शोधक समाज की स्थापना की। उन्होंने दलित जाति के लोगों को पाखंडी ब्राह्मणों से बचने की सलाह दिया। इन्होंने नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु सर्वप्रथम 1851 AD में बालिका विद्यालय की स्थापना करवाया। ज्योतिबा फूले अपनी विचारधारा को प्रचारित और प्रसारित करने हेतु गुलाम गिरि नामक ग्रंथ की रचना की।
- **आत्म सम्मान आंदोलन:**- इस आंदोलन को चलाने का श्रेय श्री रमास्वामी नायंकर या पेरियार को जाता है, इन्होंने रामायण की रचना तमिल भाषा में की है जिसे सच्ची रामायण कहा जाता है। इस आंदोलन के माध्यम से निम्न जाति के लोगों को पाखंडी ब्राह्मणों से बचकर रहने को कहा गया।
- **वायकोम सत्याग्रह:**- दलित जाति के लोगों को मंदिर में प्रवेश दिलाने हेतु 1920 ई. के दशक में गाँधी के सत्याग्रह पर आधारित वायकोम सत्याग्रह का आयोजन किया गया। इस सत्याग्रह का आयोजन श्री नारायण गुरू के द्वारा किया गया। March 1925 AD में गांधीजी के मध्यस्थत: में ट्रावणकोर की महारानी से मंदिर में प्रवेश के बारे में आंदोलनकारियों से समझौता हुआ।

मुस्लिम धर्म सुधार आंदोलन

- **अलीगढ़ आंदोलन:**- इस आंदोलन का नेतृत्त्व सर सैयद अहमद खाँ के द्वारा किया गया। यह अंग्रेजी शिक्षा और ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग के पक्ष में चलने वाला सबसे असरदार आंदोलन था। सर सैयद अहमद खाँ ने 1864 AD में साइंटिफिक सोसाईटी की स्थापना किय। बाद के वर्षों में जाकर सर सैयद अहमद खाँ ने 1875 AD में मोहम्डन एंग्लो ऑरियंटल कॉलेज की स्थापना किया। यही कॉलेज 1920 ई. के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से जाना गया।

  सर सैयद अहमद खाँ ने तहजीब-उल-अखलाक (सभ्यता और नैतिकता) नामक ग्रंथ की रचना की। साथ-ही-साथ इन्होंने कुरान के ऊपर टिका लिखा। ये हिन्दु और मुसलमान को हिन्दुस्तान की दो आँखे कहकर पुकारा करता था। इन्होंने कांग्रेस की स्थापना का विरोध किया तथा कांग्रेस के विपक्ष में युनाईटेड इंडियन पेट्रियाटिक एशोसिएशन नामक संगठन की स्थापना की।
- **अहमदिया आंदोलन:**- इस आंदोलन का नेतृत्व मिर्जा गुलाम अहमद के द्वारा किया गया। यह खुद को हजरत मोहम्मद के बाद दूसरा पैंगम्बर और कृष्ण का अवतार बताया इन्होंने बहरीन-ए-अहमदिया नामक ग्रंथ की रचना किया।
- **बहावी आंदोलन:**- इस आंदोलन का नेतृत्त्वकर्त्ता सैयद अहमद राय बरेलवी थे। इस आंदोलन का सबसे प्रमुख केन्द्र बिहार का पटना बना। इस आंदोलन को 1862-63 में लार्ड एल्गिन-I ने दबाया।
- **देवबंद आंदोलन:**- यह अलीगढ़ आंदोलन के विपरित विचारधारा वाला आंदोलन था। इस आंदोलन का नेतृत्त्वकर्त्ता मोहम्मद कासिम ननौतवी तथा सैयद अहमद गंगोही को माना जाता है।
- **पारसी धर्म सुधार आंदोलन:**- इस धर्म में सुधार लाने हेतु 1851 ई. में रहनुमाई माजदायन सभा की स्थापना दादा भाई नौरोजी, R. K. कामा, S-S बंगाली इत्यादि ने मिलकर किया। इन लोगों ने अपनी विचारधारा को प्रचारित और प्रसारित करने हेतु राष्ट्र गोफ्तार नामक पुस्तक की रचना की।

Scanned with OKEN Scanner

7. काँग्रेस

काँग्रेस एक अमेरिकी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ लोगों का समूह होता है। भारत में कांग्रेस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी के द्वारा किया गया था। काँग्रेस की स्थापना 28 Dec. 1885 को बम्बई में गोकुल दास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में स्कॉटलैंड निवासी A. O. ह्यूम के द्वारा की गयी। ऐ. ओ. ह्यूम को कांग्रेस का जनक या पिता भी कहा जाता है। A.O. ह्यूम के जीवनीकार विलियम बेडरवर्न था। इन्होंने काँग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता दो बार की–

(i) पहली बार 1889 बम्बई तथा

(ii) दूसरी बार 1910 इलाहाबाद में हो रहे अधिवेशन में किया।

काँग्रेस की स्थापना के समय भारतीय वायसराय लॉर्ड डफरिन हुआ करते थे। काँग्रेस की स्थापना में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी का अहम योगदान था। लेकिन वे काँग्रेस की स्थापना में शामिल नहीं हो पाये थे। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के द्वारा 1876 AD में इंडियन एसोसिएशन नामक संगठन की स्थापना की गयी। इसी संगठन के वार्षिक सम्मेलन में व्यस्त होने के कारण सुरेन्द्र नाथ बनर्जी काँग्रेस की स्थापना में भाग नहीं ले पाये।

काँग्रेस अधिवेशन

1. **प्रथम अधिवेशनः**- कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 1885 AD में बंबई में हुई। इस अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेश चन्द्र बनर्जी के द्वारा की गई। इस अधिवेशन में 72 सदस्य उपस्थित थे। जिसमें से 39 वकील तथा कुछ अन्य डॉक्टर और इंजिनियर थे। इसी अधिवेशन में 9 प्रस्ताव पारित हुए।

2. **द्वितीय अधिवेशनः**- काँग्रेस का द्वितीय अधिवेशन 1886 AD में कलकत्ता में हुई। इस अधिवेशन की अध्यक्षता दादा भाई नौरोजी के द्वारा की गयी। दादा भाई नौरोजी ने काँग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता तीन बार किया है-

   (i) 1886 – कलकत्ता- इसी अधिवेशन में कुल 436 सदस्यप उपस्थित हुए थे।

   (ii) 1893 – लाहौर

   (iii) 1906 – कलकत्ता - इसी अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए दादा भाई नौरोजी ने पहली बार काँग्रेस के मंच से स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया।

   ■ दादा भाई नौरोजी ने ही पहली बार राष्ट्रीय आय की गणना की।

3. **तृतीय अधिवेशनः**- यह अधिवेशन 1887 में मद्रास में हुआ था। तैय्यबजी के द्वारा की गयी। ये काँग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष थे।

4. **चतुर्थ अधिवेशनः**- यह अधिवेशन 1888 में इलाहाबाद में हुआ। इसकी अध्यक्षता जार्ज यूल के द्वारा की गई। ये कांग्रेस के प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष थे।

   [Note:– 1887 ई. में एक जनसभा को संबोधित करते हुए तात्कालिन भारतीय वायसराय लॉर्ड डफरिन ने कहा कि– "कांग्रेस एक अल्प जनसंख्या (सूक्ष्मदर्शी) का प्रतिनिधित्व करता है]

5. **पाँचवा अधिवेशनः**- यह अधिवेशन 1889 AD में मम्बई में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता सर विलियम बेडरबर्न के द्वारा की गई।

6. **छठा अधिवेशनः**- यह अधिवेशन 1890 में कलकत्ता में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता फिरोजशाह मेहता ने की। इसी अधिवेशन के दौरान कादम्बिनी गांगुली ने काँग्रेस के मंच से काँग्रेस को संबोधित की। यह काँग्रेस को सम्बोधित करने वाली प्रथम महिला बनी। कादम्बिनी गाँगुली कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री लेने वाली भी प्रथम महिला बनी है।

■ **1896 का कलकत्ता अधिवेशनः**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता रहीम तुल्ला स्यानी के द्वारा की गयी। इस अधिवेशन में ही पहली बार भारत का राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् गाया गया। वंदे मातरम नामक गीत आनंदमठ नामक ग्रंथ से लिए

Scanned with OKEN Scanner

गए है। इस ग्रंथ के रचयिता बंकिम चंद्र चटर्जी है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वंदे मातरम नामक गीत की रचना बंकिम चन्द्र चटर्जी ने की है।

- **1905 का बनारस अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता गोपाल कृष्ण गोखले के द्वारा की गयी है।
- **1907 का सूरत अधिवेशन**- इस अधिवेशन के दौरान ही पहली बार काँग्रेस स्पष्ट तौर पर दो वर्गों में विभाजित हुई। एक वर्ग गरम दल जबकि दूसरा वर्ग नरम दल कहलाया। इस फूट को सूरत फूट के नाम से जाना जाता है। कांग्रेस के इस अधिवेशन में विभाजन इस कारण हुआ क्योंकि गरमदल वाले काँग्रेस का अध्यक्ष लाला लाजपत राय को बनाना चाहता था। वहीं नरम दल वाले काँग्रेस का अध्यक्ष रास बिहारी घोष को बनाना चाहता था। अंतत: इस अधिवेशन की अध्यक्षता रास बिहारी घोष के द्वारा की गयी।
- **1908 का मद्रास अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता रास बिहारी घोष के द्वारा की गयी है। काँग्रेस के इसी अधिवेशन में काँग्रेस के लिए संविधान का निर्माण किया गया।
- **1911 का कलकत्ता अधिवेशन**- कांग्रेस के इस अधिवेशन में पहली बार राष्ट्र गान "जन-गण-मन" गाया गया। भारत के राष्ट्रगान जन-गण-मन के रचयिता रवीन्द्र नाथ टैगोर है। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित विशन नारायण धर के द्वारा की गयी।
- **बिहार**- वर्त्तमान के बिहार में काँग्रेस का अधिवेशन कुल दो बार हुआ।
  1. **1912 बाँकीपुर**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता आर. एन. माधोलकर ने की।
  2. **1922 गया**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता चित्तरंजन दास ने की।
- **1916 का लखनऊ अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार के द्वारा की गयी है। यह अधिवेशन कई लिहाज से महत्वपूर्ण है।
  (i) इसी सम्मेलन के दौरान बाल गंगाधर तिलक ने यह नारा दिया था कि- "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे कर रहेंगे।"
  (ii) दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटने के बाद महात्मा गाँधी सर्वप्रथम इसी अधिवेशन में पहली बार भाग लिए।
  (iii) बाल गंगाधर तिलक के प्रयास से काँग्रेस का गरमदल और नरमदल पुन: एक हो गए।
  (iv) मोहम्मद अली जिन्ना के प्रयास से काँग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता हुआ। जिसे लखनऊ समझौता कहा जाता है। इस समझौता के तहत् काँग्रेस ने अंग्रेजी सरकार के द्वारा मुसमानों को दिये गए। पृथक निर्वाचन के अधिकार को स्वीकृति प्रदान की। बदले में मुस्लिम लीग ने काँग्रेस को स्वतंत्रता आंदोलन में साथ देने का आश्वासन दिया। मोहम्मद अली जिन्ना के इन कार्यों को देखते हुए श्रीमती सरोजनी नायडु ने उन्हें हिन्दु मुस्लिम एकता की राजदूत कहकर पुकारी।
- **1917 का कलकत्ता अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीमती एनी बेसेंट के द्वारा की गई। यह काँग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष थी। यह आयरलैंड की रहनेवाली थी। एनी बेसेंट ने न्यू इंडिया कॉमन बिल नामक पत्रिका की रचना की।
- **लाल, बाल, पाल त्रिगुट**- इस त्रिगुट के अंतर्गत लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक तथा विपीन चन्द्र पॉल आते हैं। इन तीनों में से एक मात्र लाला लाजपत राय है, जिन्होंने कॉग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की है। लाला लाजपत राय कांग्रेस के 1920 के कलकत्ता में हो रहे विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता किया। बाल गंगाधर तिलक 1919 के कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में अंतिम बार भाग लिए।
- **1923 का विशेष अधिवेशन दिल्ली**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद के द्वारा की गयी। जब ये अध्यक्ष बने थे उस समय इनका उम्र लगभग 35 वर्ष था। अबुल कलाम आजाद का जन्म सऊदी अरब के मक्का में 1888 AD में हुआ था। ये कांग्रेस के सबसे युवा अध्यक्ष थे।

Scanned with OKEN Scanner

- **1924 का बेलगाँव अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता महात्मा गाँधी ने की है। महात्मा गांधी कांग्रेस के इस एक मात्र अधिवेशन की अध्यक्षता की है।
- **1925 का कानपुर अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीमती सरोजनी नायडु ने की है। कार्गेस की अध्यक्ष बनने वाली सरोजनी नायडु भारत की प्रथम महिला अध्यक्ष है।

  [Note– सरोजनी नायडु स्वतंत्र भारत में किसी भी राज्य की राज्यपाल बनने वाली प्रथम महिला है, जो उत्तर प्रदेश राज्य की राज्यपाल बनी थी।]
- **1929 का लाहौर अधिवेशन:**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित नेहरू के द्वारा किया गया। इन्होंने अध्यक्षता करते हुए काँग्रेस का लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य को बताया। इस अधिवेशन के दौरान ही पंडित नेहरू ने यह घोषणा किया कि अब प्रत्येक वर्ष 26 Jan. को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा। पंडित नेहरू के इसी आह्वान पर भारत में 26 Jan. 1930 AD को प्रथम स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया गया। इसी अधिवेशन में कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने संबंधी प्रस्ताव को पारित किया।
- **1931 का कराची अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता सरदार पटेल के द्वारा की गयी। इसी अधिवेशन के दौरान कांग्रेस ने अंग्रेजी सरकार से मौलिक अधिकार की मांग किया। इस अधिवेशन में महात्मा गांधी भाग लेने के लिए पंजाब के रास्ते जब कराँची जा रहे थे। तब उन्हें काला झंडा दिखाया गया। इसी अधिवेशन में गांधी इरविन समझौता को स्वीकृति प्रदान की गयी। जिसके तहत् महात्मा गांधी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए इग्लैंड गये।
- **1934 का बंबई अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता डॉ. राजेंद्र प्रसाद के द्वारा की गयी।
- **1937 का फैजपुर अधिवेशन**- यह गाँव में आयोजित प्रथम अधिवेशन था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित नेहरू के द्वारा की गई। इसी अधिवेशन के दौरान कांग्रेस ग्रामसभा का गठन हुआ।
- **1938 का हरिपुरा अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता सुभाषचन्द्र बोस के द्वारा की गयी। इस अधिवेशन के दौरान ही राष्ट्रीय नियोजन समिति की स्थापना हुई। इस समिति के प्रथम अध्यक्ष पंडित नेहरू बने।
- **1939 का त्रिपुरी (M.P.) अधिवेशन**- इस अधिवेशन में अध्यक्ष पद को लेकर पहली बार चुनाव हुए जिस कारण इस अधिवेशन को त्रिपुरी अधिवेशन भी कहा जाता है। इस अधिवेशन का अध्यक्ष जहाँ सुभाषचद्र बोस बनना चाहता था। वहीं महात्मा गांधी पट्टाभिसीतारमैय्या को अध्यक्ष बनाना चाहता था। अंतत: इस अधिवेशन की अध्यक्षता सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा की गयी।
- **1940 का रामगढ़ अधिवेशन**- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद के द्वारा की गई जो 1940-46 तक अध्यक्ष के पद पर बने रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति पूर्व काँग्रेस के अध्यक्ष पर सबसे अधिक वर्षों तक रहने का रिकॉर्ड अबुल कलाम आजाद का ही है।

[**Note**– (i) आजादी के समय कांग्रेस का अध्यक्ष जे. बी. कृपलानी थे।

(ii) आजादी के पश्चात् Dec. 1947 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन दिल्ली में बुलाया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने की।

(iii) 1939 में सुभाषचन्द्र बोस के कांग्रेस छोड़ने के पश्चात् कांग्रेस का अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बने।

(iv) स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर सर्वाधिक वर्षों तक रहने का रिकॉर्ड श्रीमती सोनिया गांधी का है। (1998-2017)

(v) वर्त्तमान में कांग्रेस के अध्यक्ष मलिका अर्जुन खड़गे हैं।

काँग्रेस से संबंधित महत्वपूर्ण कथन

(i) लॉर्ड डफरिन ने कांग्रेस के बारे में कहा है कि– "कांग्रेस अल्प जनसंख्या (सुक्ष्मदर्शी) का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था है।"

Scanned with OKEN Scanner

(ii) लॉर्ड कर्जन ने कहा है कि- "कांग्रेस की महल भरभरा कर गिरने वाली है हमारी ईच्छा है कि हम उसकी मृत्यु में उसे सहायता प्रदान करें।"

(iii) बंकिम चन्द्र चटर्जी ने कहा है कि- "कांग्रेस के लोग पदों के भूखे राजनीतिज्ञ हैं।"

(iv) बाल गंगाधर तिलक ने कहा है कि "यदि हम वर्ष में एक बार मेढ़क की तरह टरटराएँ तो उससे हमें कुछ भी मिलने वाला नहीं है।"

(v) लाला लाजपत राय ने कांग्रेस सम्मेलनों को शिक्षित भारतीयों के राष्ट्रीय मेले की संज्ञा दिया।

(vi) अश्विनी कुमार दत्त ने कांग्रेस सम्मेलनों को तीन दिनों का तमाशा कहा।

(vii) विपिन चंद्र पॉल ने कांग्रेस को याचना संस्था की संज्ञा दिया।

(viii) लॉर्ड कर्जन ने कांग्रेस को गंदी चीज और देशद्रोही संगठन कहा।

[Note– काँग्रेस के संदर्भ में Safety Valve Theory लाला लाजपत राय ने दिया है।

उदारवादी युग (1885 - 1905)

■ काँग्रेस के ऊपर 1885 AD से 1905 AD तक उदारवादी नेताओं का पकड़ बना रहा। जिस कारण इस अवधि को उदारवादी युग कहा जाता हैं। उदारवादी युग के प्रमुख नेता के रूप में दादा भाई नौरोजी, फिरोज शाह मेहता, व्योमेश चंद्र बनर्जी, आनंद मोहन बोस, गोपाल कृष्ण गोखले इत्यादि का विवरण मिलता हैं। उनमें से दादा भाई नौरोजी 1887 में सुरेंद्र नाथ बनर्जी 1888 AD में इंग्लैंड गये। दोनों ने मिलकर 1889 AD में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के ब्रिटिश समिति का गठन किया। इस समिति ने 1890 में इंडिया नामक पत्रिका संपादन किया। 1890 ई. में दादा भाई नौरोजी ने यह घोषणा किया कि 1892 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का वार्षिक सम्मेलन लंदन में होगा। लेकिन संयोगवश वहाँ आम चुनाव होने थे जिस कारण लंदन में सम्मेलन नहीं हुआ।

हाऊस ऑफ कॉमन का सदस्य बनने वाला प्रथम भारतीय दादा भाई नौरोजी था। उन्होंने लिबरल पार्टी से फिंसवरी नामक स्थान से चुनाव जीता।

■ **उदारवादियों की देनः-**

1. उदारवादियों ने ही पहली बार यह स्पष्ट किया कि किस प्रकार अंग्रेजी सरकार भारतीयों का शोषण कर रहा है। उदारवादी नेता के अंतर्गत दादा भाई नौरोजी प्रथम नेता हुए जिन्होंने भारत के लिए राष्ट्रीय आय की गणना किया। दादा भाई नौरोजी ने भारत के लिए राष्ट्रीय आय की गणना 1867-68 ई. में किया। उस समय भारतीयों की प्रति व्यक्ति आय 20 रू. हुआ करता था।
2. उदारवादियों के प्रभाव में आकर ही अंग्रेजी सरकार ने 1892 का भारत परिषद् अधिनियम पारित किया। इसी अधिनियम ने पहली बार भारत में निर्वाचन पद्धति की शुरूआत की।
3. दादा भाई नौरोजी ने "Poverty and Unbritish rule in India" नामक पुस्तक की रचना किया इसमें उन्होंने धन के निष्कासन का सिद्धांत दिया। (Drain of Wealth)

Note : वर्त्तमान में देश में राष्ट्रीय आय की गणना केंद्रीय सांख्यिकी संगठन के द्वारा की जाती हैं।

उग्रवादी युग

■ भारतीय इतिहास में 1905-1919 ई. काल को उग्रवादी युग के नाम से जाना जाता है। इस युग के प्रमुख नेता बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, अरविंद घोष, विपिन चन्द्र पाल इत्यादि का विवरण मिलता है। इनमें से बाल गंगाधर तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति आम नागरिकों को जागरूक करने हेतु 1893 में गणपति महोत्सव और 1896 में शिवाजी महोत्सव का आयोजन किया। उन्होंने मराठी भाषा में केशरी पत्रिका तथा अंग्रेजी भाषा में मराठा

Scanned with OKEN Scanner

पत्रिका का संपादन किया। बाल गंगाधर तिलक ने उग्रवाद को बढ़ावा दिया।

- बाल गंगाधर तिलक पत्रकार का निर्वहन करते हुए जेल जाने वाले प्रथम व्यक्ति थे।

एक प्रमुख उग्रवादी नेता के रूप में अरविंद घोष का विवरण मिलता हैं। इन्होंने कहा है कि – ''राजनीतिक स्वतंत्रता किसी भी राष्ट्र की प्राणवायु होती है।'' अरविंद घोष ने 'न्यू लैंप फॉर ओल्ड' नामक पत्रिका की रचना की और उसके माध्यम से उग्रवाद की क्रमवार व्याख्या प्रस्तुत की। उग्रवादियों के प्रभाव में आकर ही काँग्रेस ने बंगाल विभाजन के खिलाफ स्वदेशी या बंग-भंग आंदोलन चलाया।

बंगाल विभाजन

- 1905 के दौरान भारत की आजादी हेतु जो आंदोलन चलायी जा रही थी। उस आंदोलन का सबसे प्रमुख केंद्र बंगाल था। साथ-ही-साथ यह एक बड़ा प्रांत भी हुआ करता था। जिस कारण यहाँ शासन-प्रशासन सही ढंग से चला पाना मुश्किल हो रहा था।

अंग्रेजी सरकार ने घोषणा किया कि बंगाल का विभाजन प्रशासनिक आधार पर किया जाएगा। लेकिन बंगाल का विभाजन साम्प्रदायिक आधार पर हुआ।

बंगाल विभाजन की घोषणा 20 July 1905 को लॉर्ड कर्जन के द्वारा की गयी है। इस घोषणा के पश्चात् भारत के तात्कालिन राष्ट्रवादि नेताओं का सम्मेलन कलकत्ता के टाऊन हॉल में 7 Aug 1905 को हुआ।

- इसके खिलाफ स्वदेशी या बंग-भंग आंदोलन चलाने की घोषणा की गई और यह आंदोलन 7 Aug 1905 से ही प्रारंभ भी हो गया। इस आंदोलन का प्रसार बंगाल के अलावा अन्य क्षेत्र जैसे- दिल्ली, पंजाब, मद्रास etc क्षेत्रों में भी देखने को मिलता हैं।

बंगाल के क्षेत्र में आंदोलन का नेतृत्व विपीन चन्द्र पाल ने, मद्रास के क्षेत्र में चिदम्बरम पिल्ले ने, दिल्ली के क्षेत्र में सैय्यद हैदर रजा ने पंजाब के क्षेत्र में लाला लाजपत राय ने, महाराष्ट्र एवं पुणे के क्षेत्र में बाल गंगाधर तिलक ने नेतृत्व किया। इसी आंदोलन के दौरान पहली बार बहिष्कार शब्द का प्रयोग कृष्ण कुमार मित्र के द्वारा संजीवनी नामक पत्रिका में की गयी।

बंगाल का विभाजन दो वर्गों में किया गया।

i. **पूर्वी बंगाल** - यह मुस्लिम बहुल इलाका था। उसकी आबादी 3.1 करोड़ थी। इसकी राजधानी ढ़ाका थी।

ii. **पश्चिमी बंगाल** - यह हिंदु बहुल ईलाका था। इसकी आबादी 5.4 करोड़ थी। इसकी राजधानी कोलकाता थी।

बंगाल विभाजन 16 Oct 1905 को लागू हुए हैं। इस तिथि को बंगाल-वासियों ने शोक दिवस के रूप में मनाया। इस तिथि को पूरे बंगालवासी सड़को पर निकले और गंगा स्नान किया साथ-ही-साथ काली पूजा का व्रत रखा। पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल के लोगों ने एक-दूसरे के हाथ पर राखी बाँधकर एकता का परिचय दिया। इस तिथि को बंगाल की सड़कों पर निम्न नारे लगाये गये थे।

i. हमें विभाजन नहीं चाहिए।

ii. बंगाल एक हैं।

iii. वंदे मातरम् आदि।

दिल्ली दरबार (1911)

इंग्लैंड के सम्राट जॉर्ज पंचम और महारानी मैरी का 1911 ई. में भारत आगमन हुआ। भारत आगमन के पश्चात् उनका पूरे भारतवर्ष में विरोध किया गया जिसका कारण बंगाल विभाजन था। 12 Dec 1911 को तात्कालिन भारतीय वायसराय लॉर्ड हार्डिंग-II ने जॉर्ज पंचम और महारानी मैरी के स्वागत में दिल्ली दरबार का आयोजन किया। इसी दिल्ली दरबार में बंगाल के

Scanned with OKEN Scanner

विभाजन को रद्द किया गया तथा बंगाल को पुनर्गठित कर पुनः बंगाल का विभाजन किया गया तथा बंगाल से एक नए प्रांत बिहार का गठन किया गया। औपचारिक रूप से बिहार का गठन 22 March 1912 को हुआ है, इसी कारण प्रत्येक वर्ष 22 March को बिहार दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। लेकिन विधिवत रूप से बिहार का गठन 1 Apr. 1912 को हुआ हैं।

Note: आधुनिक बिहार का जनक डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को माना जाता हैं।

दिल्ली दरबार 1911 में घोषणा की गई कि भारत की राजधानी कलकत्ता के बजाए दिल्ली को बनाया जायेगा। तत्पश्चात् 1 Apr. 1912 से भारत की राजधानी दिल्ली बनी। इससे पहले 1774 - 1911 तक भारत की राजधानी कलकत्ता बनी रही।

मुस्लिम लीग

इसकी स्थापना 30 Dec 1906 ई. को लॉर्ड मिंटो-II की प्रेरणा से ढ़ाका में आगा खाँ, बकार-उल-मुल्क, सलीमुल्ला आदि के द्वारा किया गया। बाद के दिनों में मिंटो-II से प्रेरित होकर ही मुसलमानों ने पृथक निर्वाचन की मांग किया। जिसे अंग्रेजी सरकार भारत शासन अधिनियम 1909 के तहत् प्रदान किया। लॉर्ड मिंटो-II को भारत में साम्प्रदायिक निर्वाचन का जनक माना जाता हैं।

होमरूल लीग आंदोलन (1916) - (गृहस्वशासन)

- सर्वप्रथम होमरूल लीग आंदोलन आयरलैंड में चला था। इसी से प्रेरित होकर 1916 AD में भारत में होमरूल लीग आंदोलन चलाये गये। भारत में होमरूल लीग आंदोलन चलाने का श्रेय बाल गंगाधर तिलक और श्रीमति एनी बेसेंट को जाता हैं।

तिलक ने होमरूल लीग आंदोलन की स्थापना महराष्ट्र के क्षेत्र में Apr 1916 में किया। इन्होंने होमरूल लीग आंदोलन का प्रथम अध्यक्ष जोसेफ बैपटिस्टा जबकि प्रथम सचिव एनसी केलकर को बनाया। बाल गंगाधर तिलक होमरूल लीग आंदोलन को लोकप्रिय बनाने हेतु भारत का भ्रमण शुरू किया। और वे भारत भ्रमण के दौरान यह कहा करत थे कि -

''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं और हम उसे लेकर रहेंगे। बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पत्रिका केशरी और मराठा के माध्यम आंदोलन को लोकप्रिय बनाया।

Sept 1916 AD में मद्रास के क्षेत्र में होमरूल लीग आंदोलन की स्थापना आयरिश महिला श्रीमति एनी बेसेंट के द्वारा की गयी। एनी बेसेंट ने होमरूल लीग आंदोलन का सचिव जॉर्ज अरूण्डेल को बनायी। श्रीमति एनी बेसेंट कॉमन बिल और न्यू इंडिया नामक पत्रिका के माध्यम से होमरूल लीग आंदोलन का प्रचार-प्रसार की। श्रीमति एनी बेसेंट ने ही इस आंदोलन को राष्ट्रीस स्तर पर पहचान दिलाई। कालान्तर में तिलक और एनी बेसेंट का होमरूल लीग आंदोलन दोनों एक हो गया। होमरूल लीग आंदोलन ने ही श्रीमति एनी बेसेंट को लोकप्रिय बनाया।

- श्रीमति एनी बेसेंट की उसी लोकप्रियता को देखते हुए काँग्रेस ने 1917 के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष चुन लिया। एनी बेसेंट काँग्रेस की अध्यक्षता करने वाली प्रथम महिला बनी।
- Aug 1917 में मांटेग्यू घोषणा आई जिसमें यह कहा गया कि अंग्रेजी सरकार क्रमबद्ध तरीका से भारत में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करेगा। इसी घोषणा के कारण श्रीमति एनी बेसेंट ने खुद को होमरूल लीग आंदोलन से अलग कर ली। July 1918 AD में मांटेग्यू घोषणा छपी इस घोषणा को लेकर काँग्रेस पुनः दो वर्गों में विभाजित हो गया जहाँ उग्रवादी नेता मांटेग्यु घोषणा की आलोचना कर रहे थे। वही दूसरी ओर उदारवादी नेता माण्टेग्यू घोषणा का समर्थन करते हुए इसे भारत के लिए मेग्नाकार्टा कह रहा था। अर्थात् दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि काँग्रेस में दूसरी बार विभाजन 1918 में हुआ।

Note - 1918 में SN बनर्जी के नेतृत्व में अखिल भारतीय उदारवादी संघ की स्थापना हुई।

Scanned with OKEN Scanner

8. गाँधी युग (1919-1947)

महात्मा गाँधी

- जन्म - 2 October 1869 गुजरात के पोरबंदर
- 2 October को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- पिता - करमचन्द गाँधी
- माता - पुतली बाई
- विवाह - 1883 में कस्तूरबा गाँधी से
- पुत्र - हरिलाल, मणिलाल, रामदास, देवदास
- गाँधीजी के 5 वे पुत्र की संज्ञा जमनालाल बजाज को दिया जाता हैं।
- राजनैतिक गुरू - गोपालकृष्ण गोखले
- प्रमुख शिष्या - मीरा बेन थी (इंग्लैण्ड) जिसका वास्तविक नाम मैडलीन स्लेड था।
- कानून की पढ़ाई के लिए 1888 ई. में लंदन गए। 1891 में डिग्री प्राप्त कर भारत लौटे।
- 1893 में गुजरात के प्रसिद्ध व्यापारी दादा अब्दुल्ला के मुकदमे के लिए दक्षिण-अफ्रीका गए।
- गाँधीजी के दार्शनिक विचारधारा पर इमर्सन, थोरो और टॉल्सटॉय का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा था।
- दक्षिण अफ्रीका में नटाल काँग्रेस की स्थापना 1894 में हुआ।
- S.A के डरबन में फीनिक्स फॉर्म की स्थापना 1904 में हुआ।
- गाँधजी ने सत्याग्रह का सर्वप्रथम प्रयोग S.A में 1906 में किया था।
- 1908 में पहली बार गाँधीजी जेल गए।
- 1910 में S.A के जोहांसबर्ग में टॉल्सटॉय फार्म की स्थापना किया।
- आत्मकथा - सत्य के साथ मेरे प्रयोग (1925) My experience with truth
- 1903 में S.A में इंडियन ओपिनियन तथा लंदन प्रवास के दौरान हिन्द स्वराज (1909) की रचना किए
- 1914 में Indian relief Act पारित हुआ।
- 46 वर्ष की उम्र में 9 जनवरी 1915 को भारत लौटे (मुंबई के अपोलो बंदरगाह) जिसे प्रवासी दिवस के रूप में मनाया जाता हैं।
- 1916 में अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना किये।
- अखिल भारतीय खादी बोर्ड की स्थापना - 1923
- अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना - 1925
- प्रमुख पुस्तक - यंग इंडिया (1919), हरिजन (1932)
- गाँधीजी ने गोपालकृष्ण गोखले की तुलना गंगा से, फिरोजशाह मेहता की तुलना हिमालय से तथा बाल गंगाधर तिलक की तुलना समुद्र से किया।

उपाधि

1. राष्ट्रपिता - सुभाष चंद्र बोस
2. महात्मा - रवीन्द्र नाथ टैगोर (चंपारण सत्याग्रह के समय)
3. बापू - जवाहर लाल नेहरू

Scanned with OKEN Scanner

4. वन मैन बाउंड्री फोर्स – माउंटबेटन
5. अर्धनग्न फकीर – विस्टन चर्चिल
6. देशद्रोही फकीर – विंस्टन चर्चिल
7. भिखारियों का राजा – मदन मोहन मालवीय
8. आधुनिक युग के अज्ञात शत्रु – डॉ. राजेंद्र प्रसाद
9. जादूगर – शेख मुजीब-उर-रहमान

- महात्मा गाँधी की सबसे बड़ी प्रतिमा पटना के गाँधी मैदान में हैं।
- गाँधजी काँग्रेस के वार्षिक अधिवेशन 1916 में जो लखनऊ में हो रहा था उसमें भाग लिये वही पर राजकुमार शुक्ल की मुलाकात गाँधीजी से हुई और उन्हीं के आग्रह पर गाँधीजी ने चंपारण सत्याग्रह का आयोजन किया।

चंपारण सत्याग्रह (1917)

- गाँधीजी ने भारत में सत्याग्रह की शुरूआत चंपारण (बिहार) से की।
- चंपारण सत्याग्रह की शुरूआत भीतिहँरवा गाँव से हुई।
- चंपारण सत्याग्रह के कारण ही ब्रिटिश सरकार ने तीन-कठिया प्रथा को समाप्त कर दिया।
- गाँधीजी के दबाव में आकर ब्रिटिश सरकार ने अवैध वसूली का 25% वापस करने को तैयार हो गया जिस आधार पर हम कह सकते है कि गाँधजी के द्वारा चलाया गया चंपारण सत्याग्रह सफल रहा।
- गाँधीजी जी के दृष्टि से अहिंसा कायरों और कमजोरो का अस्त्र नहीं हैं। केवल बहादुर और निडर व्यक्ति ही इसका प्रयोग कर सकता हैं।
- **गाँधीजी को तीन लक्ष्य जान से प्यारे थे-**
  1. हिन्दू-मुस्लिम एकता
  2. छुआछुत विरोध संघर्ष
  3. देश की स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को सुधारना
- गाँधजी एक धर्मपरायण हिन्दू थे, मगर उनका सांस्कृतिक – धार्मिक दृष्टिकोण संकुचित ने होकर बहुत व्यापक था। उन्होंने लिखा हैं- ''भारतीय संस्कृति ने तो पूरी तरह हिन्दू है न ही इस्लामी और न ही कोई और संस्कृति। यह सबका समन्वय है।''
- गाँधीजी ने 1918 में गुजरात के खेड़ा जिला में ''कर नहीं दो'' आंदोलन चलाया।
- खेड़ा सत्याग्रह में सरदार पटेल गाँधीजी के अनुयायी बने थे।

अहमदाबाद (1918)

- यह विवाद प्लेग बोनस को लेकर हुआ था।
- गाँधीजी ने भूख-हड़ताल अहमदाबाद मिल मजदूर के समर्थन में किया।
- गाँधीजी को भूख हड़ताल की प्रेरणा ''रॉस्किन'' से मिली।
- गाँधीजी ने अहमदाबाद में ''वर्ग सहयोग'' का नारा दिया।
- अहमदाबाद लेबर एसोसिएशन की स्थापना 1918 में किया।

रॉलेट एक्ट → भारतीय वायसराय → चेम्सफोर्ड

- भारतीयों की आवाज दबाने के लिए 1918 में सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया। इसी आयोग के रिपोर्ट पर 19 March, 1919 को रॉलेट एक्ट लागू किया गया।

Scanned with OKEN Scanner

- इस कानून के तहत संदेह के आधार पर भारतीयों को गिरफ्तार कर बंद कमरा में मुकदमा चलाकर उसे 2 वर्ष तक की सजा दी जा सकती थी।
- भारतीयों ने इसका विरोध करते हुए "काला-कानून" की संज्ञा दी। साथ-ही इसे बिना वकील, बिना अपील, बिना दलील वाले कानून की संज्ञा दी।
- गाँधीजी ने इस कानून के विरोध में देशव्यापी हड़ताल 6 अप्रैल 1919 को किया।
- रॉलेट सत्याग्रह का सबसे बड़ा केंद्र पंजाब का अमृतसर बना। जहाँ डॉ. सतपाल और सैफुद्दीन किचलू इसका नेतृत्व कर रहा था।

जालियाँवाला बाग हत्याकांड (1919)

- रॉलेट एक्ट तथा डॉ. सतपाल तथा किचलू के गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर की जनता 13 April 1919 को जालियाँवाला बाग में एकत्रित होकर जनसभा का शांतिपूर्ण संचालन कर रहे पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर जनरल डायर के आदेश पर सैनिकों ने इन निहत्थी भीड़ पर जान बूझकर गोली बरसाया जिसे जालियाँवाला बाग हत्याकांड कहते हैं।
- इस हत्याकांड में हंसराज नामक सैनिक ने अंग्रेज को सहायता प्रदान की थी।
- इस हत्याकांड के विरोध में-
  महात्मा गाँधी ने - कैसर-ए-हिंद
  जमनालाल बजाज ने - राय बहादुर
  रविन्द्र नाथ टैगोर ने - सर & नाइटहुड की उपाधि लौटा थी।
- शंकरन नायर नामक भारतीय ने वायसराय के कार्यकारिणी परिषद् से इस्तीफा दे दिया।
- इस हत्याकांड के बाद पंजाब में मॉर्शल लॉ 15 Apr 1919 को लागू किया गया।
- इस हत्याकांड के बाद हिंसक विद्रोह की आशंका के चलते गाँधीजी ने 19 Apr 1919 को रॉलेट सत्याग्रह स्थगित करने की घोषणा किया।

हंटर कमीशन का रिपोर्ट

- जालियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए W.W हंटर की अध्यक्षता में हंटर आयोग का गठन किया गया।
- Our Indian Musalman - W.W. हंटर
- "मुसलमान यदि खुश और संतुष्ट हैं तो भारत में ब्रिटिश शक्ति का महतव बचाव होगा।"

W.W हंटर

- **हंटर आयोग में कुल 8 सदस्य थे जिसमें तीन भारतीय थे-**
  1. चीमन लाल सीतलवाड़
  2. साहबजादा सुल्तान अहमद
  3. जगत नारायण
- सरकारी रिपोर्ट के अनुसार जालियाँवाला आग हत्याकांड में कुल 379 व्यक्ति मारे गये जबकि मरने वालों की संख्या 1000 से अधिक और लगभग 3000 व्यक्ति बुरी तरह घायल हुए थे।
- जालियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए मदनमोहन मालवीय की अध्यक्षता में काँग्रेस ने एक कमिटी का गठन किया। इसके अन्य सदस्य मोतीलाल नेहरू और गाँधीजी भी थे। प्रारूप तैयार - गाँधी जी
- कालांतर में पंजाब के सरदार उधम सिंह ने 13 मार्च 1940 ई. को लंदन के कैक्सटन हॉल में जनरल डायर की गोली मारकर हत्या कर दी।

Scanned with OKEN Scanner

खिलाफत आंदोलन (1920)

- 19 Oct 1919 को भारतीय मुसलमान ने राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी सरकार के खिलाफ खिलाफत दिवस मनाया।
- खिलाफत आन्दोलन का नेतृत्व मुहम्मद अली और शौकत अली नामक दो भाइयों ने किया।
- 23 नवम्बर 1919 को हिन्दु और मुसलमानों की एक संयुक्त कांफ्रेंस दिल्ली में हुई। खिलाफत आंदोलन के तहत् हुई इस कांफ्रेंस की अध्यक्षता गाँधीजी ने किया।

असहयोग आंदोलन (1920)

- महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलने वाला देश का पहला जनव्यापी आंदोलन असहयोग आंदोलन था जिसकी शुरूआत 1 अगस्त 1920 से मानी जाती हैं।
- काँग्रेस का विशेष अधिवेशन सितम्बर 1920 ई. हुआ जिसकी अध्यक्षता लाला लाजपत राय कर रहे थे। इसी अधिवेशन में असहयोग आंदोलन चलाने का प्रस्ताव पारित किया गया।
- Dec 1920 में काँग्रेस का वार्षिक अधिवेशन नागपुर में हुआ। इसकी अध्यक्षता विजय राघवाचारी ने किया। इस अधिवेशन में काँग्रेस सर्वसम्मिति से असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव को पारित किया।
- मुहम्मद अली जिन्ना, एनी बेसेन्ट और बिपीन चन्द्रपाल काँग्रेस द्वारा चलाए जाने वाले असहयोग आंदोलन से सहमत नहीं थे जिस कारण ये सभी नेता काँग्रेस की सदस्यता त्याग दी।
- असहयोग आंदोलन चलाने के लिए गाँधीजी ने तिलक स्वराज्य फंड की स्थापना किया।
- नवम्बर 1921 ई. में इंग्लैंड के राजमुमार प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर उसका पूरे भारत में बहिष्कार किया गया।

  बम्बई - जमनालाल बजाज, एस. ए. डांगे
  मद्रास - चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (राजा जी)
  आन्ध्र प्रदेश - टी. प्रकाशम् (आन्ध्र केसरी)
  दिल्ली - आसफ अली
  पंजाब - लाला लाजपत राय
  बंगाल - C.R. दास एवं उनकी पत्नी बसंती
  उत्तर प्रदेश - लाल बहादुर शास्त्री
  बिहार - राजेंद्र प्रसाद, मजहरूल हक
- असहयोग आंदोलन के समय केरल के मालावार तट पर 1921 में मोपला विद्रोह हुआ। इस विद्रोह के नेता अली मुसलियार थे।
- अवध के क्षेत्र में एका आंदोलन चलाया गया।
- बिहार में इसी आंदोलन के समय 1921 में मजहरूल हक ने खैरूल मियाँ से पटना के दीघा में जमीन दान के रूप में लेकर सदाकत आश्रम की स्थापना की।
- सदाकत आश्रम से मजहरूल हक ने 'द मदरलैंड' नामक पत्रिका निकाला।
- बिहार में इसी आंदोलन के दौरान जयप्रकाश नारायण पटना कॉलेज से नाम कटवाकर आंदोलन में कूद पड़े।
- इसी आंदोलन के दरम्यान् डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वकालत छोड़ दी।
- 1921 - अहमदाबाद → हकीम अजमल खाँ
- 5 Feb 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के चौरी-चौरा नामक स्थान पर उग्र भीड़ ने चौरी-चौरा थाना को घेर कर आग लगा दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गये। इस घटना के समय गाँधीजी बारदोली में थे।

Scanned with OKEN Scanner

- चौरी-चौरा घटना के पश्चात् 12 Feb 1922 ई. को गाँधीजी ने इस आंदोलन को स्थगित करने की घोषणा किया।
- द इंडियन स्ट्रगल - सुभाष चन्द्र बोस
- गाँधीजी को 10 मार्च 1922 को गिरफ्तार कर 6 वर्ष की सजा सुनाया गया। मगर स्वास्थ्य संबंधी कारणों से 5 Feb 1924 को रिहा कर दिया गया।

स्वराज्य पार्टी (1923)

- 1 जनवरी 1923 ई. को स्वराज्य पार्टी की स्थापना इलाहाबाद में C.R. दास और मोतीलाल नेहरू के द्वारा किया गया।
- इसके प्रथम अध्यक्ष C.R दास जबकि सचिव मोतीलाल नेहरू बने।
- स्वराज्य पार्टी के सदस्यों ने 1923 में हुए विधान परिषद् के चुनाव में भाग लिया जिसमें 101 सीटों में से 42 पर उन्हें जीत मिली।
- 16 जून 1925 को C.R दास का निधन हो गया।

क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण (1924-34)

- 1924 ई. में शचीन्द्र शान्याल के नेतृत्व में कानपुर में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की गई।

काकोरी कांड (1925)

- 9 Aug 1925 को सरकारी खजाना सहारनपुर से लखनऊ जा रहा था तो HRA के सदस्यों के द्वारा काकोरी नामक स्टेशन पर उस खजाना को लूट लिया गया जिसे काकोरी षड्यंत्र के नाम से जाना जाता हैं।
- काकोरी षड्यंत्र के प्रमुख सूत्रधार रामप्रसाद बिस्मिल थे।
- कोकारी कांड के जुर्म में 1927 में रामप्रसाद बिस्मिल राजेंद्र लाहिड़ी, रोशन सिंह, अशफाकउल्ला खाँ को फाँसी पर लटका दिया गया।
- संभवत: अशफाकउल्ला खाँ फाँसी पर लटकने वाला पहला मुस्लिम था जो देश की आजादी के लिए फाँसी पर लटका।
- भगत सिंह, छबीलदास के नेतृत्व में 1926 ई. में नौजवान सभा की स्थापना की गई।
- 1928 ई. में भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद ने मिलकर दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना किया।
- इंकलाब जिंदाबाद का नारा भगत सिंह के द्वारा दिया गया था।
- शहीद-ए-आजम के नाम से भगत सिंह को जाना जाता है।
- भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू ने मिलकर 17 Dec 1928 को लाहौर के तात्कालीन पुलिस कप्तान सौण्ड्र्स को गोली मारकर हत्या कर दिया जिसके आरोप में इन तीनों को 23 March 1931 को फाँसी पर लटका दिया गया।
- पब्लिक सेफ्टी बिल पास होने के विरोध में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त 8 Apr 1829 को दिल्ली के केंद्रीय विधानसभा में खाली बेंच पर बम फेंका और पर्चे लहराते हुए अपनी गिरफ्तारी दी।
- बिहार के बेतिया निवासी फणीन्द्र घोष ने भगत सिंह के खिलाफ मुखबिरी की।
- 1929 में लाहौर के जेल में बंद एक प्रमुख क्रांतिकारी जतीनदास ने जेल कुव्यवस्था के खिलाफ 63 दिनों का भूख हड़ताल किया जो सबसे लम्बा भूख हड़ताल था और अंतत: 13 सिम्बर 1929 को जेल में ही उनका निधन हो गया।
- 27 Feb 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में चन्द्रशेखर आजाद पुलिस से मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तारी से बचने के लिए स्वयं गोली मार ली।
- सूर्यसेन को "मास्टर दा" के नाम से जाना जाता हैं।

Scanned with OKEN Scanner

- सूर्यसेन ने चटगाँव स्थित सरकारी शास्त्रागार को लूटा।
- सूर्यसेन फरवरी 1933 में गिरफ्तार कर लिए गए और कुछ समय पश्चात् फाँसी पर लटका दिया गया।

साइमन कमीशन

- साइमन कमीशन का गठन सर साइमन की अध्यक्षता में 8 नवम्बर 1927 ई. में लंदन में हुआ। इसमें 7 सदस्य थे जिसमें एक भी भारतीय नहीं था जिस कारण इसे वाइट मैन कमीशन भी कहा जाता हैं।
- साइमन कमीशन 3 Feb 1928 को सर्वप्रथम बम्बई पहुँची।
- भारत में साइमन विरोधी आंदोलन का सबसे प्रमुख केंद्र लाहौर बना जहाँ उसका नेतृत्व लाला लाजपत राय कर रहे थे। उस आंदोलन के दौरान पुलिस की लाठियों से लाला लाजपत राय बुरी तरह घायल हो गए। कुछ दिनों पश्चात् 17 Nov 1928 को उनका निधन हो गया।
- भारत के तत्कालीन भारत सचिव लॉर्ड बरकेनहेड ने साइमन कमीशन के कार्यों को स्थगित कर दिया।
- बरकेनहेड की चुनौतियों को स्वीकारते हुए एक 8 सदस्यीय आयोग का गठन किया गया। जिसके अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू बने जिसे नेहरू आयोग कहा गया। नेहरू आयोग ने जो सिफारिश दिया उसे नेहरू रिपोर्ट कहा गया।
- नेहरू रिपोर्ट पर विचार करने के लिए 1928 में दिल्ली में सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मुस्लिम लीग ने उसे मानने से इन्कार कर दिया।
- मुहम्मद अली जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट के विकल्प में 14 सूत्री माँग प्रस्तुत की।
- साइमन कमीशन के रिपोर्ट पर ही 1935 का भारत शासन - अधिनियम पारित हुआ।

बारदोली सत्याग्रह - 1928

- बारदोली गुजरात का एक जिला हैं।
- गाँधी जी के आग्रह पर सरदार वल्लभ भाई के नेतृत्व में बारदोली सत्याग्रह चलाया गया।
- बारदोली सत्याग्रह की सफलता पर वहाँ की महिलाओं द्वारा वल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि दी गई।

काँगेस का लाहौर अधिवेशन - 1929

- काँग्रेस का वार्षिक अधिवेशन - 1929 में लाहौर में हुआ जिसकी अध्यक्षता पंडित जवाहर लाल नेहरू ने किया।
- उसी अधिवेशन में काँग्रेस ने 'पूर्ण स्वराज्य' के लक्ष्य की प्राप्ति को सर्वसम्मति से पारित किया।
- 31 Dec 1929 ई. में पंडित नेहरू ने रावी नदी के किनारे तिरंगा फहराया एवं घोषणा किया की प्रत्येक 26 Jan को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा।
- 26 Jan 1930 को प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)

(नमक सत्याग्रह)

- सविनय अवज्ञा आंदोलन देश में चलने वाला दूसरा जनव्यापी आंदोलन था जिसका नेतृत्व राष्ट्रीय स्तर पर महात्मा गाँधी ने किया।
- महात्मा गाँधी अपने पत्रिका यंग इंडिया के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के समक्ष 11 सूत्री माँग रखी।
- Feb 1930 में काँगेस कार्य समिति की बैठक साबरमति आश्रम में हुआ। इसी में काँग्रेस ने ब्रिटिश राज्य के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का निर्णय लिया।

Scanned with OKEN Scanner

- गाँधीजी 12 March 1930 को साबरमती आश्रम से अपने 78 सहयोगियो के साथ दांडी के लिए प्रस्थान किए जिसे दांडी मार्च कहा जाता है।
- इन 78 सहयोगी में बिहार के एक प्रमुख नेता कारो बापू उर्फ गिरीपद चौधरी शामिल थे।
- गाँधीजी के इस दांडी मार्च की तुलना सुभाष चन्द्रबोस ने नेपोलियन के पेरिस मार्च तथा मुसोलिनी के रोम मार्च से किया हैं।
- गाँधी जी 240 मील की दूरी तय कर 6 Apr 1930 को गुजरात के नवसारी जिला स्थित दांडी पहुँचकर समुद्र के पानी से नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा जिस कारण इसे नमक सत्याग्रह भी कहा जाता हैं और इस नमक कानून को तोड़ते हुए 6 Apr 1930 ई. को सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत किया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं ने ''मंजरी सेना'' और बच्चों ने ''वानरी सेना'' का गठन किया।
- तमिलनाडु - चक्रवर्त्ती राज गोपालाचारी (वेदारण्यम् मार्च)
- आन्ध्र प्रदेश - पी. के पिल्लै
- उस आंदोलन के दौरान बिहार में छपरा के जेल कैदियों ने नंगी हड़ताल का आयोजन किया तथा मुजफ्फरपुर के जेल कैदियों ने लोटा विद्रोह किया।
- उत्तर-प्रदेश - गोविन्द वल्लभ पंत
- गुजरात - अबुल कलाम आजाद
- खुदाई खिदमतगार आंदोलन का संचालन खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने नेतृत्व में 1929 से ही उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रांत में चल रहा था। इस आंदोलन से जुड़े हुए लोग लाल कुर्त्ता पहनते थे जिस कारण इसे लाल कुर्त्ती आंदोलन भी कहा गया।
- खान अब्दुल गफ्फार खाँ को फ्रंटियर गाँधी या सीमाँत गाँधी भी कहा जाता हैं।
- गाँधीजी को 5 May 1930 को गिरफ्तार कर लिया लेकिन हिंसक घटनाओं को देखते हुए अंग्रेजी सरकार ने 26 Jan 1931 को गाँधी जी को रिहा कर समझौता करने की रणनीति बनाने लगा।
- तेगबहादुर सप्रु के प्रयासों से गाँधीजी और भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच 5 मार्च 1931 को एक समझौता हुआ जिसे गाँधी-इरविन समझौता या दिल्ली समझौता भी कहा जाता है।
- मार्च 1931 में काँग्रेस का वार्षिक अधिवेशन कराँची में हुआ। इसकी अध्यक्षता सरदार पटेल ने किया। इस अधिवेशन में गाँधीजी भाग लेने के लिए कराची जा रहे थे तो इन्हें काला झंडा दिखाया गया।

गोलमेज सम्मेलन

- तीनों गोलमेज-सम्मेलन लंदन में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री जेम्स रैम्जे मैक डोनाल्ड के अध्यक्षता में हुआ।

  पहला गोलमेज सम्मेलन - 12 Nov 1930

  द्वितीय गोलमेज सम्मेलन - 7 Sep 1931

  तृतीय गोलमेज सम्मेलन - 17 Nov 1932
- काँगेस ने मात्र एक द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में गाँधीजी के नेतृत्व में भाग लिया था जहाँ गाँधीजी राजपूताना नामक जहाज से लंदन गए थे।
- तीनों गोलमेज सम्मेलन में डॉ. भीमराव अंबेडकर ने अछूतों के प्रतिनिधितव के लिए भाग लिया।
- गोलमेज सम्मेलन का उद्घाटन इंग्लैंड के सम्राट जॉर्ज पंचम ने किया।
- इंग्लैंड के प्रधानमंत्री अम्बेडकर की माँग पर 1932 ई. में कम्युनल अवॉर्ड या साम्प्रदायिक पंचाट की घोषणा की।
- गाँधी जी साम्प्रदायिक पंचाट के विरोध में पूना के यरवदा जेल में 20 Sept 1932 से जेल में आमरण अनशन पर

Scanned with OKEN Scanner

बैठ गए।

- 26 Sept 1932 को मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से अम्बेडर और गाँधी के बीच एक समझौता हुआ जिसे पूना समझौता कहा जाता है।
- अप्रैल 1934 ई. आते-आते सविनय अवज्ञा आंदोलन समाप्त हो गया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महाराष्ट्र कर्नाटक और मध्य भारत में जंगल-कानून तोड़े गए और पूर्वी भारत में ग्रामीण जनता ने चौकीदारी कर अदा करने से इन्कार कर दिया।

1934-1940 ई. के बीच की घटनाएँ

- साइमन कमीशन रिपोर्ट के आधार पर भारत सरकार अधिनियम-1935 लाया गया जो अब तक का सबसे बड़ा अधिनियम था। इसमें 321 धाराएँ और 10 अनुसूची था।

  राजगोपालाचारी - द्वैध शासन से भी बुरा

  जिन्ना - यह पूर्णत: सड़ा हुआ है
- काँग्रेस ने इस अधिनियम का विरोध किया। जवाहर लाल नेहरू इस अधिनियिम को अनेको ब्रेक वाला परन्तु इंजन रहित गाड़ी की संज्ञा दिया।
- 1937 - 5 राज्य - मद्रास, संयुक्त प्रान्त, मध्य प्रान्त, बिहार और उड़ीसा
- 1937 ई. में प्रांतीय विधानसभा के चुनाव में काँग्रेस का चुनाव च्न्ह पीला बक्सा था।
- पंजाब में यूनियनिष्ट पार्टी - प्रधानमंत्री
  - सिकन्दर हयात खाँ
- बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी - प्रधानमंत्री
  - फजलूल हक
- बिहार के पहले मुख्य मंत्री काँग्रेसी बाबू भी कृष्ण सिंह बने जिसे 'बिहार केसरी' के नाम से जाना जाता है।
- अबुल कलाम आजाद ने ''इंडिया विन्स फ्रीडम'' में लिखा है कि ''मुस्लिम मूर्ख था जिन्होंने काँग्रेस के समक्ष सुरक्षा की माँग रखा और काँग्रेस उससे भी मूर्ख निकला जिन्होंने सुरक्षा देने से इन्कार कर दिया।''
- 1938 ई. में मुस्लिम लीग का अधिवेशन पटना में हुआ।
- काँग्रेस 28 महीना शासन करने के पश्चात् 1939 में विभिन्न प्रांतो से अपने सरकार से इस्तीफा दे दिया।
- मुस्लिम लीग 22 दिसम्बर 1939 ई. को मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।
- भारत के तात्कालीन वायसराय लिन लिथगो ने भारतीयों से द्वितीय विश्व युद्ध में सहायता पाने के उद्देश्य से 8 Aug. 1940 को एक प्रस्ताव रखा जिसे अगस्त प्रस्ताव कहते हैं।

  अगस्त घोषणा - मांटेग्यू (1917-18)

  अगस्त प्रस्ताव - लॉर्ड लिन लिथगो (1940)

  अगस्त संकल्प - महात्मा गाँधी (1942)

  प्रत्यक्ष कार्यवाही - एम. ए. जिनना (1946)

1934-1940 काँग्रेस के अन्दर की घटनाएँ

- 1934 - बम्बई - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- 1934 ई. में काँग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना आचार्य नरेंद्र देव तथ जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुआ। इसका पहला अधिवेशन पटना में हुआ।

Scanned with OKEN Scanner

- 1936 - लखनऊ – जवाहर लाल नेहरू

  इस अधिवेशन में नेहरू ने कहा कि मैं स्वभाव से ही समाजवादी हूँ मेरा उद्देश्य भारत में समाजवादी राज्य की स्थापना करना हैं।

- 1937 - फैजपुर (महाराष्ट्र) – पंडित नेहरू (गाँव में प्रथम)

  इस अधिवेशन में काँग्रेस ग्राम की स्थापना की गई जिसका डिजाईन नंदलाल बोस ने बनाया।

- 1938 - हरिपुरा (गुजरात) – सुभाष चन्द्र बोस
- 1939 - त्रिपुरी (M.P) - सुभाष चन्द्र बोस
- पहली बार काँग्रेस के इतिहास में अध्यक्ष पद के लिए चुनाव 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में हुआ।
- मई 1939 को सुभाष ने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना किया। जिसमें शीलभद्र याजी ने काफी सहयोग दिया।
- सुभाष चन्द्र बोस के इस्तीफा देने के पश्चात् डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को काँग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया।
- 1940 - रामगढ़ – अबुल कलाम आजाद (जन्म – मक्का, 1888)
- हरिजन सेवक संघ – 30 sep 1932 (अस्पृश्यता निवारण संघ)
- हरिजन सेवक संघ की स्थापना गाँधीजी के द्वारा किया गया। इसके अध्यक्ष घनश्याम दास बिड़ला को बनाया गया।
- महात्मा गाँधी के द्वारा 8 Jan 1933 को मंदिर प्रवेश दिवस मनाया गया।
- गाँधीजी 1934 के भूकंप के बाद बिहार आये।
- गाँधीजी के लिए महाराष्ट्र में वर्धा आश्रम की स्थापना जमनालाल बजाज ने किया।
- वर्धा आश्रम से गाँधीजी ने 1937 में शिक्षा के क्षेत्र में एक नई विचारधारा दिया जिसे वर्धा शिक्षा योजना के नाम से जाना जाता है। इसका प्रारूप जाकिर हुसैन ने तैयार किया।

व्यक्तिगत सतयाग्रह (1940)

- 17 Oct 1940 को गाँधीजी ने पावनार नामक स्थान से व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया।
- इस सत्याग्रह के प्रथम सत्याग्रही विनोबा भावे, दूसरे सत्याग्रही पंडित जवाहर लाल नेहरू, तीसरे सत्याग्रही ब्रह्मदत्त थे।
- इस आंदोलन को दिल्ली चलो आन्दोलन भी कहा जाता हैं।

भारत में सम्प्रदायवाद का विकास

- काँग्रेस की स्थापना के पश्चात् काँग्रेस के विरोध आंदोलन चलाने के लिए अंग्रेजी सरकार ने सर सैय्यद अहमद खाँ को तैयार किया।
- अंग्रेजी सरकार से प्रेरित होकर 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई।
- 1909 ई. के अधिनियम के तहत् मुसलमानों को आरक्षण और पृथक निर्वाचन की सुविधा दी गई।
- 1930 ई. में मुस्लिम लीग का अधिवेशन इलाहाबाद में इसकी अध्यक्षता मो. इकबाल ने किया।
- इंकलाब– मो. इकबाल
- सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा – मो. इकबाल
- मो. इकबाल ने पहली बार दो राष्ट्र का सिद्धांत दिया।
- 1933 ई. में इंग्लैंड में रहने वाले भारतीय छात्र चौधरी रहमत अली ने पाकिस्तान शब्द का प्रयोग किया।
- 1940 - मुस्लिम लीग का अधिवेशन लाहौर में हुआ। इसकी अध्यक्षता मु. अली जिन्ना ने किया। इसी अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान के प्रस्ताव को पारित किया।

Scanned with OKEN Scanner

- "बाँटो और छोड़ो" का नारा मुस्लिम लीग ने 1943 ई. के कराँची अधिवेशन में दिया।
- 16 Aug 1946 - प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस
- 14 Aug 1947 - को पाकिस्तान का निर्माण हुआ
- पाकिस्तान के पहले प्रधानमंत्री – लियाकत अली
- पाकिस्तान के पहले गवर्नर जनरल – मु. अली जिन्ना
- 1915 में हरद्विार में मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में हिन्दु महासभा की स्थापना की गई।
- 1925 में डॉ. हेडगवार के अध्यक्षता में RSS की स्थापना की गई।

1942 की घटनाएँ

क्रिप्स प्रस्ताव (1942) : 23 मार्च 1942 को स्टैफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में क्रिप्स मिशन भारत पहुँची।

i. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य की स्थापना की जाएगी।

ii. भारत के लिए संविधान का निर्माण किया जाएगा। etc

- महात्मा गाँधी क्रिप्स प्रस्ताव को "पोस्ट डेटेड चेक" की संज्ञा दिया।

भारत छोड़ो आंदोलन - 1942

- हम इस देश की बालू से ही काँग्रेस से बड़ी संस्था खड़ा कर देंगे – महात्मा गाँधी
- 8 Aug 1942 को देशभर के काँग्रेस कार्यकत्ताओं का सम्मेलन बम्बई के ग्वालियर टैंक मैदान में हुई। इसी सम्मेलन को संबोधित करते हुए गाँधी जी ने "करो या मरो" का नारा दिया।
- 8 Aug 1942 के मध्यरात्री को अंग्रेजी सरकार द्वारा ऑपरेशन जीरो आवर चलाकर काँग्रेस के सभी दिग्गज नेता को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया गया।
- गाँधी जी को पूना के आगा खाँ पैलेस में रखा गया। गाँधी जी के साथ कस्तूरबा गाँधी, सरोजनी नायडू तथा गाँधीजी के निजी सचिव महादेव देसाई को भी रखा गया। इसी दौरान जेल में ही महादेव देसाई और कस्तूरबा गाँधी का निधन हो गया।
- पंडित नेहरू एवं सरदार पटेल को अहमदनगर के किला में रखा गया। इसी दरम्यान् नेहरू ने "डिस्कवरी ऑफ इंडिया" की रचना किया।

  जयप्रकाश नारायण – हजारीबाग सेंट्रल जेल

  डॉ. राजेंद्र प्रसाद – बाँकीपुर जेल पटना
- भारत छोड़ो आंदोलन की शुरूआत 9 Aug 1942 से मानी जाती है।
- कम्युनिष्ट पार्टी ने उस आंदोलन का विरोध किय।

  बम्बई – जमनालाल बजाज

  मद्रास – चक्रवर्त्ती राज गोपालाचारी

  संयुक्त प्रांत – गोविंद वल्लभ पंत
- बिहार में 11 Aug 1942 को छात्रों के एक विशाल जुलूस पर सचिवालय भवन के समीप पटना के D.M आर्चर के आदेश पर गोली चलाया गया जिसमें 7 छात्र शहीद हो गए। जिसे सचिवालय कांड कहा जाता हैं।
- इस गोलीकांड का विरोध करते हुए बिहार के तत्कालीन महाधिवक्ता बलदेव सहाय अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जयप्रकाश नारायण, बैद्यनाथ झा ने मिलकर नेपाल की तराई में स्थित राजविलाश जंगल में हनुमान नगर स्थान पर आजाद दास्ता का गठन किया।
- इस आंदोलन के दरम्यान् गाँधीजी ने सरकार की नीतियों के खिलाफ 1943 में 21 दिनों का आमरण अनशन किया।
- 1944 ई. आते-आते भारत छोड़ो आंदोलन स्थगित हो गया।

Scanned with OKEN Scanner

9. सुभाष चन्द्र बोस और आजाद हिंद फौज

- सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 Jan 1897 को उड़ीसा के कटक में हुआ।
  पिता - जानकीनाथ बोस
  माता - प्रभावती बोस
- 1929 में इंडिपेंडेंट लीग की स्थापना सुभाषा चन्द्र बोस के द्वारा किया गया।
- 1938 - हरिपुरा (गुजरात) - सुभाष चन्द्र बोस
- 1939 - त्रिपुरी (M.P) - सुभाष चन्द्र बोस
- गाँधीजी त्रिपुरी अधिवेशन - 1939 में सुभाष के विरोध में पट्टाभि सीतारमैया को अपना उम्मीदवार घोषित किया। इस अधिवेशन में पहली बार अध्यक्ष पद को लेकर चुनाव हुए जिसे त्रिपुरी संकट कहा जाता है। इसमें सुभाष ने सीतारमैय्या को 203 मतों से पराजित किया।
- काँग्रेस का इतिहास - पट्टाभि सीतारमैय्या
- 3 May 1939 को फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा किया गया।
- 1940 में अंग्रेजी सरकार सुभाष को गिरफ्तार कर कलकत्ता स्थित एंग्लिकन रोड स्थित सुभाष के आवास में ही उन्हें नजरबंद कर दिया गया।
- 17 जनवरी 1941 को सुभाष अपने मित्र रहमत अली के सहयोग से अपनी बंदी गृह से भागने में सफल हुआ।

आजाद हिंद फौज

- 1 sept 1942 को कर्नल मोहन सिंह के नेतृत्व में मलाया में आजाद हिन्द फौज का गठन किया गया।
- जर्मनी में हिटलर के सेनापति रावेन ट्रॉप ने सुभाष को "नेताजी" की उपाधि दिया।
- सुभाष 21 Oct 1943 को सिंगापुर में आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया।
- सुभाष आजाद हिंद फौज को तीन भागों में बाँटा-
  1. गाँधी ब्रिगेड 2. नेहरू ब्रिगेड 3. सुभाष बिग्रेड
- महिला के लिए झाँसी बिग्रेड की स्थापना किया जिसका अध्यक्ष लक्ष्मी सहगल को बनाया गया।
- आजाद हिंद फौज ने अंडमान द्वीप को जीतकर उसका नाम शहीदर द्वीप तथा निकोबार को जीतकर उसका नाम स्वराज्य द्वीप रखा।
- July 1944 में सुभाष रंगून के जुगली हॉल से अपने रेडियो प्रसारण में गाँधीजी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया।
- दिल्ली चलो, जय हिन्द, "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा" - सुभाष चन्द्र बोस
- 6 Aug और 9 Aug 1945 को अमेरिका द्वारा जापान के दो नगर क्रमशः हीरोशिमा एवं नागासाकी पर बम गिराने के कारण जापान बर्बाद हो गया।
- जापान से रूप जाने के क्रम में 18 Aug 1945 को फार्मुसा द्वीप (ताइवान) के निकट हवाई जहाज दुर्घटना में सुभाष का निधन हो गया।
- हबीबूल रहमान ने सुभाष का अंतिम संस्कार कर उसके अस्थि कलश को जापान के रेबोनिज मठ में रखा (पनडुब्बी यात्रा)
- नेताजी डेड और एलाइव - समरगुहा
- सुभाष की मृत्यु की जाँच के लिए शाहनवाज आयोग, खोसले आयोग तथा मुखर्जी आयोग जैसी कमिटी बनी।
- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् आजाद हिंद फौज के सैनिकों के ऊपर दिल्ली के लाल किला में मुकदमा चलाकर फाँसी

Scanned with OKEN Scanner

की सजा सुनाया गया।

- आजाद हिन्द फौज के सैनिकों की पैरवी पंडित नेहरू, कैलाश नाथ काटजू, भूलाभाई देसाई जैसे नेताओं ने किया।

1944 से 1947 के बीच की घटनाएँ

- चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने 10 July 1944 ई. को अपना एक प्रस्ताव दिया जिसे C.R. फार्मूला कहते हैं।
- C.R फार्मूला के तहत गाँधीजी और जिन्ना के बीच वार्त्ता हुआ जिसमें गाँधीजी ने मुहम्मद अली जिन्ना को कायदे आजम (महान नेता) की संज्ञा दिया।

वेवेल प्रस्ताव/शिमला सम्मेलन

- 1944 में भारत का वायसराय लॉर्ड वेवेल और इंग्लैंड का प्रधानमंत्री चर्चिल था।
- चर्चिल के सुझाव पर वेवेल के द्वारा जून 1945 ई. में भारतीयों के समक्ष एक प्रस्ताव रखा गया जिसे वेवेल प्रस्ताव कहते हैं।
- वेवेल प्रस्ताव पर विचार करने के लिए 25 June 1945 से 14 July 1945 के बीच शिमला में एक सम्मेलन हुआ जिसे शिमला सम्मेलन कहते हैं। इस सम्मेलन में काँग्रेस की ओर से अबुल कलाम आजाद और मुस्लिम लीग की ओर से अली जिन्ना ने भाग लिया।

नौसैनिक विद्रोह - 1946

- बम्बई में ''तलवार'' नामक जहाज पर नौसैनिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है।
- 18 Feb 1946 को बम्बई के नौसैनिकों के द्वारा अंग्रेजी सरकार के खिलाफ विद्रोह का आयोजन किया।
- देशभर के नौसैनिकों ने 22 Feb 1946 को देशव्यापी हड़ताल किया।
- सरदार पटेल के नेतृत्व में अंतत: 25 Feb 1946 को नौसैनिक विद्रोह समाप्त हुआ।

कैबिनेट मिशन योजना - 1946

संसदीय मंडल योजना

- 24 March 1946 को तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन भारत पहुँची उसमें पैंथिक लॉरेंस (भारत सचिव) ए. बी. अलेक्जेंडर (नौसेना प्रधान) सटैफर्ड क्रिप्स (वाणिज्य प्रधान) शामिल थे।
- प्रधानमंत्री कलीमेंट एटली से विचार विमर्श कर मई 1946 में कैबिनेट मिशन के सदस्यों द्वारा भारतीयों के समक्ष एक प्रस्ताव रखा जिसे कैबिनेट मिशन योजना कहा गया। उसमें निम्न बाते थे-

1. भारतीयों के हाथ में सत्ता सौंप दी जाएगी।
2. भारत का विभाजन नहीं होगा।
3. भारत का संविधान भारतीयों के द्वारा बनाया जाएगा उसके लिए संविधान सभा गठित होगा।
4. प्रांतों का समूहीकरण होगा।
   a. छः हिन्दु बहुल्य प्रांत - बिहार, उड़िसा, मध्य प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, मद्रास, बम्बई
   b. तीन मुस्लिम बहुल्य - पंजाब, सिंध, उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत
   c. दो मुस्लिम बहुल्य - बंगाल और असम

कैबिनेट मिशन योजना की असफलता पर मुस्लिम लीग ने 16 Aug 1946 को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाया और घोषणा किया की लड़कर लेंगे पाकिस्तान। इसके पश्चात् भारत में साम्प्रदायिक दंगा जोर पकड़ लिया।

- जिस समय भारत में दंगा जोरों पर था उस समय वेवेल ने ऐटली को सुझाव दिया की हमारे लिए बेहतर होगा कि हम भारत की समस्या को भारतीयों के भाग्य पर छोड़कर इंग्लैंड वापस लौट जाए जिसे ''ब्रेक डाऊन पॉलिसी'' कहा गया।

Scanned with OKEN Scanner

1945 - 1947 के बीच की घटनाएँ

LAC - भारत – चीन

LOC - भारत – पाकिस्तान

- दिसम्बर 1945 में भारत में केंद्रिय स्तर पर विधानसभा के 104 सीटों में से 102 सीट पर चुनाव हुआ इसमें काँग्रेस को 57 सीट मिला जबकि लीग को 30 सीट।

अंतरिम सरकार - 1946

प्रधानमंत्री – नेहरू

गृहमंत्री – सरदार पटेल

रक्षा मंत्री – बलदेव सिंह

खाद्य एवं कृषि मंत्री – राजेंद्र प्रसाद

रेलवे मंत्री – आसफ अली

- अक्टूबर 1946 में मुस्लिम लीग के 5 सदस्य अंतरिम सरकार में शामिलए हुए-
  1. वित्त मंत्री - लियाकत अली
  2. स्वास्थ्य मंत्री – गजान्तर अली खाँ
  3. जोगेन्द्र नाथ मंडल – विधि मंत्री
  4. संचार मंत्री – अब्दुल रब नश्तर
  5. वाणिज्य – आई. आई. चुन्दरीगर
- प्रांतीय स्तर पर जो चुनाव हुए उसमें से 6 प्रांतों में काँग्रेस को पूर्ण बहुमत मिला जबकि 8 प्रांतों में काँग्रेस सरकार बनाने में सफल रही।
- बंगाल और सिंध में मुस्लिम लीग की सरकार बनी।
- 20 Feb 1947 को इंग्लैंड के प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने घोषणा किया की जून 1948 तक भारत की सत्ता भारतीयों के हाथ सौंप दी जाएगी।
- 24 March 1947 को माउंटबेटन भारत का वायसराय बनकर भारत पहुँचा।
- 3 June 1947 को माउंटबेटन ने अपनी योजना की घोषणा किया जिसे माउंटबेटन योजना कहा गया उसमें निम्न बाते कही गयी।
  1. 15 Aug 1947 को भारत की सत्ता भारतीयों के हाथ सौंप दी जाएगी।
  2. भारत का विभाजन होगा तथा पाकिस्तान का निर्माण होगा।
  3. देशी रियासत को यह अधिकार होगा की वे भारत में मिले या पाकिस्तान में या स्वतंत्र रहे। etc
- माउंटबेटन योजना पर विचार करने के लिए 10 June 1947 को मुस्लिम लीग का अधिवेशन दिल्ली में हुआ। जिसकी अध्यक्षता जिन्ना ने किया।
- माउंटबेटन योजना पर विचार करने के लिए 14 June 1947 को काँग्रेस की बैठक दिल्ली में हुई जिसकी अध्यक्षता डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने किया।
- 14 July 1947 को इस प्रस्ताव को इंग्लैंड के संसद में रखा गया जिसे 18 July 1947 को स्वीकृति मिल गई।
- अंतत: 15 Aug 1947 का सत्ता, भारतीयों के हाथ स्थांतरित कर दिया गया और उसके पूर्व 14 Aug 1947 को पाकिस्तान का निर्माण हुआ।

Scanned with OKEN Scanner

- भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू और प्रथम गवर्नर जनरल माउंटबेटन बने। कुछ ही दिनों के पश्चात् माउंटबेटन इंग्लैंड वापस चले गए और चक्रवर्ती राजगोपालाचारी को भारत को वायसराय बनाया गया जो कि प्रथम और अंतिम भारतीय वायसराय थे।
- भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा का निर्धारण रेडक्लिफ के द्वारा किया गया।
- भरत की आजादी के समय गाँधी जी काँग्रेस के सदस्य नहीं थे और वे नोआखोली (बांग्लादेश) में दंगा को शांत करा रहे थे।
- माउंटबेटन ने गाँधी जी को "ONE MAN BOUNDARY FORCE" की संज्ञा दिया।
- आजादी के समय काँग्रेस के अध्यक्ष जे. बी. कृपलानी थे।
- हैदराबाद - पुलिस कार्यवाई
- जूनागढ़ (गुजरात) - जनमत संग्रह
- कश्मीर - विलय पत्र पर हस्ताक्षर (राजा हरि सिंह)
- महात्मा गाँधी की हत्या 30 Jan 1948 को नाथूराम गोडसे के द्वारा गोली मारकर किया गया। उस दिन को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- गाँधीजी का अंतिम शब्द ''हे राम'' था।
-

	पुस्तक	लेखक
1.	तमश -	भीष्म सहनी
2.	ट्रेन टू पाकिस्तान -	खुशवंत सिंह
3.	भारत विभाजन के गुनहगार -	राम मनोहर लोहिया
4.	डिवाइड एंड क्वीट -	पेन्डरले मून
5.	दी मैन टू डिवाइडेड इंडिया -	रफीक जकारिया
6.	सोम प्रकाश -	ईश्वर चन्द्र विद्यासागर
7.	सुबहे आजादी -	फैज अहमद फैज
8.	अल हिलाल -	अबुल कलाम आजाद

ज्ञान बिन्दु जी.एस. एकेडमी Dir. Paushan Anand

Scanned with OKEN Scanner

Win2PDF

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

Scanned with OKEN Scanner